

# शेयर बाजार का ताला, सफलता की चाबी

नए निवेशकों के लिए सफलता के सूत्र



डॉ. सुधीर दीक्षित

# शेयर बाजार का ताला, सफलता की चाबी

नए निवेशकों के लिए सफलता के सूत्र

डॉ. सुधीर दीक्षित

शेयर बाजार का ताला, सफलता की चाबी: नए निवेशकों के लिए सफलता के सूत्र, by Dr. Sudhir Dixit

© 2019 Dr. Sudhir Dixit

All rights reserved. No portion of this book may be reproduced in any form without permission from the publisher, except as permitted by U.S. copyright law.

**Disclaimer:** The publisher and the author specifically disclaim any liability that is incurred from the use or application of the contents of this book. The Publisher and the author do not accept responsibility for consequences of financial decisions taken by readers on the basis of information provided herein.

**चेतावनी :** प्रकाशक और लेखक इस पुस्तक की सामग्री के प्रयोग के परिणामस्वरूप होने वाली किसी भी प्रकार की हानि, घाटे या नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। इस पुस्तक की जानकारी के आधार पर पाठकों द्वारा लिए जाने वाले निवेश-संबंधी या वित्तीय निर्णयों के परिणामों के लिए प्रकाशक और लेखक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। निवेश संबंधी कोई भी निर्णय पाठक स्वविवेक से लें तथा इस पुस्तक की किसी भी बात को सलाह या अनुशंसा के रूप में न लें। यह पुस्तक सामान्य जानकारी देने और बुनियादी बातें बताने के उद्देश्य से लिखी गई है और इसका लक्ष्य पाठकों को निवेश संबंधी राय देना नहीं है।

# विषय-सूची

किंडल संस्करण की प्रस्तावना

मूल पुस्तक की प्रस्तावना

शेयर बाजार और ट्रेडिंग क्या है?

1. शेयर बाजार में निवेश क्यों करें
2. निवेश करने से पहले क्या सावधानियाँ बरतें
3. शेयर चुनने की 10 कसौटियाँ
4. शेयर बाजार के उठने या गिरने के 10 प्रमुख कारण
5. कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ने के 20 प्रमुख कारण
6. मशहूर निवेशक वॉरेन बफेट की सफलता के 10 सूत्र

परिशिष्ट 1 : सेंसेक्स में शामिल कंपनियाँ

परिशिष्ट 2 : निफ्टी में शामिल कंपनियाँ

परिशिष्ट 3 : शेयर बाजार की शब्दावली

परिशिष्ट 4 : अतिरिक्त जानकारी के लिए संदर्भ-सूची

## किंडल संस्करण की प्रस्तावना

इस पुस्तक को एक मायने में ऐतिहासिक पुस्तक कहा जा सकता है, क्योंकि यह 2006 में लिखी गई थी, यानी आज से 13 साल पहले। इसे मंजुल पब्लिशिंग हाउस ने 'शेयर बाजार में सफलता के सूत्र' टाइटल से प्रकाशित किया था, लेकिन बाद में उन्होंने सेल्फ-हेल्प पुस्तकों पर फोकस करने का निर्णय लिया, जिससे यह पुस्तक कई संस्करण बिकने के बाद प्रकाशित नहीं की गई और 'आउट ऑफ स्टॉक' हो गई। हालाँकि यह पुस्तक पाठकों को पसंद आई थी, जिसका प्रमाण यह है कि इसके कई संस्करण बिके थे, लेकिन यह उन्हें उपलब्ध नहीं हो पा रही थी। अब भारत में किंडल के लोकप्रिय होने के बाद यह पुस्तक पाठकों को उपलब्ध कराते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

जनवरी 2006 में निफ्टी 3000 से भी कम था और इन 13 सालों में यह 4 गुना हो गया है। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि शेयर बाजार कितने मुनाफे का सौदा है। दूसरी तरफ, कई कंपनियों के शेयरों के भाव इन 13 सालों में 0 पर भी आ गए हैं, इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यह कितना जोखिम भरा काम है। बहरहाल, शेयर बाजार में ज्ञान ही सुरक्षित रहने का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

एक बात बताना चाहूँगा, यह पुस्तक खास तौर पर उस हिंदीभाषी व्यक्ति के लिए है, जो शेयर बाजार में नया-नया आया है और इसके बारे में बुनियादी ज्ञान हासिल करना चाहता है। वैसे तो शेयर बाजार में ज्ञान चोट खाने के बाद ही मिलता है, लेकिन अगर आप इस पुस्तक को पढ़ लेते हैं, तो आपको चोट गहरी नहीं लगेगी। शेयर बाजार में हर निवेशक को शुरुआत में घाटे की ट्यूशन फ्रीस चुकानी पड़ती है, तभी वह सीखता है। लेकिन अगर आप इस पुस्तक को पढ़कर बुनियादी बातें समझ लेते हैं, तो शायद ट्यूशन फ्रीस कम चुकानी पड़ेगी। और हाँ, यह पुस्तक विशेषज्ञों के लिए नहीं है; हालाँकि उन्हें भी वॉरेन बफेट की सफलता के 10 सूत्र पढ़ने से फायदा हो सकता है।

इस पुस्तक को किंडल पर प्रकाशित करते समय मुझे यह निर्णय लेना था कि इसमें नवीनतम जानकारी दूँ या पुस्तक को जस का तस रहने दूँ। दोनों के ही अपने-अपने लाभ-हानि थे। नवीनतम जानकारी का लाभ यह था कि इससे पाठक को अद्यतन जानकारी मिलती, जैसे यह कि वर्तमान में सेंसेक्स और निफ्टी में कौन सी कंपनियाँ शामिल हैं, जो इन सालों में बदल गई हैं। पुस्तक को मूल स्वरूप में रहने देने का लाभ यह था कि पाठकों को 13 साल पहले के भाव देखकर शेयर बाजार की ज़्यादा व्यापक समझ हासिल होगी और यह पुस्तक ज़्यादा विश्वसनीय लगेगी। पाठकों को यह रोचक भी लगेगा और ज्ञानवर्धक भी, इसलिए मैंने पुस्तक को इसके मूल स्वरूप में ही रहने दिया है।

इस पुस्तक में शेयर बाजार के बुनियादी सिद्धांत बताए गए थे, जो आज भी उतने ही कारगर हैं, जितने तब थे जब इसे पहली बार लिखा गया था, क्योंकि मानव स्वभाव आज भी वैसा ही है, जैसा 13 साल पहले था। लोभ और दहशत आज भी शेयर बाजार पर उतने ही हावी हैं, जितने 13 साल पहले थे। इसलिए शेयर बाजार के उन बुनियादी सिद्धांतों को पढ़ें, जो 13 साल पहले भी कारगर थे और आज भी हैं।

डॉ. सुधीर दीक्षित

5 जुलाई 2019

## मूल पुस्तक की प्रस्तावना

अगर आप यह पुस्तक पढ़ रहे हैं, तो इसका मतलब यह है कि या तो आप पहले से ही शेयर बाजार में हैं या फिर इसमें उतरने का इरादा रखते हैं। ज्यादातर लोग जब शेयर बाजार में उतरते हैं, तो उनके मन में अतिशयोक्तिपूर्ण सपने होते हैं। वे दस हजार रुपए का निवेश करके लखपति बनना चाहते हैं। यह पुस्तक ऐसे लोगों के लिए नहीं है, जो शेयर को लॉटरी का टिकट मानते हैं और रातोंरात लखपति बनना चाहते हैं। यह पुस्तक तो ऐसे लोगों के लिए है, जो अपनी पूँजी पर प्रति वर्ष 20 या 25 प्रतिशत कमाना चाहते हैं।

लोग-बाग शेयर बाजार में इस तरह व्यवहार करते हैं, जैसे दुनिया कल ही खत्म हो जाएगी और शेयर बाजार दोबारा नहीं खुलेगा। शायद इसका एक कारण यह है कि वे शेयर बाजार में सफलता के सूत्र नहीं जानते हैं। वे यह नहीं जानते हैं कि दुनिया में हर चीज के होने का कोई न कोई कारण होता है। जैसा रॉबर्ट ग्रीन इंगरसोल ने कहा है, 'प्रकृति में पुरस्कार या दंड नहीं होता है - सिर्फ परिणाम होता है।'

इस छोटी सी पुस्तक में शेयर बाजार का तार्किक विश्लेषण किया गया है। इसमें कारणों और परिणामों का अध्ययन किया गया है। चौथे अध्याय में शेयर बाजार के उठने या गिरने के 10 सबसे आम कारण बताए गए हैं। इस अध्याय को पढ़ने के बाद आम आदमी भी यह जान सकता है कि शेयर बाजार क्यों गिरता है या क्यों उठता है। पाँचवें अध्याय में कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ने के 20 कारण बताए गए हैं। यह अध्याय बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि हर निवेशक यही तो चाहता है कि उसकी कंपनी के शेयर के भाव बढ़ें।

यह पुस्तक शेयर बाजार को तर्क की कसौटी पर परखने का प्रयास है। वैसे यह भी सच है कि शेयर बाजार हमेशा तर्कपूर्ण व्यवहार नहीं करता है और इसमें लोभ या दहशत की भावनाएँ हावी हो सकती हैं। बहरहाल, ऐसा सिर्फ कुछ समय के लिए ही होता है। लंबे समय में तर्क की विजय होती है और उसी कंपनी के शेयर आसमान छूते हैं, जिसमें दम होती है।

यह पुस्तक तर्कपूर्ण होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी है। इसमें कोरे सिद्धांतों का विश्लेषण नहीं है, बल्कि सफलता के व्यावहारिक सूत्रों का वर्णन है। यह पुस्तक आपको शेयर बाजार में सफलता के लिए तैयार करती है। और अंतिम बात, आम तौर पर ऐसा माना जाता है कि शेयर बाजार में सफलता पाना हर एक के बूते की बात नहीं है और इसके लिए विशेष बुद्धि की जरूरत होती है। सफल निवेशकों के अनुसार यह धारणा गलत है। जैसा मशहूर निवेशक पीटर लिनच कहते हैं, 'हर व्यक्ति में इतनी बुद्धि होती है कि वह शेयर बाजार में सफल हो सके। अगर आपने पाँचवीं क्लास की गणित की परीक्षा पास कर ली है, तो आप यह काम कर सकते हैं।'

## शेयर बाजार और ट्रेडिंग क्या है?

शेयर बाजार में उन कंपनियों के शेयर खरीदे और बेचे जाते हैं, जो स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होते हैं। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर दो स्टॉक एक्सचेंज हैं : बी.एस.ई. (बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज) और एन.एस.ई. (नेशनल स्टॉक एक्सचेंज)। बी.एस.ई. के सूचकांक को सेंसेक्स कहा जाता है और यह तीस कंपनियों के भाव के आधार पर घटता-बढ़ता रहता है (सेंसेक्स में शामिल कंपनियों की सूची परिशिष्ट 1 में दी गई है)। एन.एस.ई. या नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के सूचकांक को निफ्टी कहा जाता है और यह पचास कंपनियों के भाव के आधार पर घटता-बढ़ता रहता है (निफ्टी में शामिल कंपनियों की सूची परिशिष्ट 2 में दी गई है)। बहरहाल, अगर आप किसी एक्सचेंज से शेयर खरीदना या बेचना चाहते हैं, तो आप सीधे-सीधे ऐसा नहीं कर सकते। इसके लिए आपको किसी ब्रोकर या सब-ब्रोकर की मदद लेनी पड़ेगी।

पुराने जमाने में शेयर कागज के रूप में खरीदे-बेचे जाते थे, लेकिन आजकल उनका इलेक्ट्रॉनिक आदान-प्रदान होता है। यही वजह है कि आपके पास शेयर रखने के लिए एक डीमैट अकाउंट भी होना चाहिए। अगर आप ऑनलाइन ट्रेडिंग भी करना चाहते हैं, तो आप आई.सी.आई.सी.आई. बैंक जैसी किसी बैंक में डीमैट अकाउंट खुलवा सकते हैं, जहाँ आपको ऑनलाइन ट्रेडिंग की सुविधा मिल सके। डीमैट अकाउंट आपके बचत खाते से जुड़ा रहता है और जब भी आप शेयर खरीदते-बेचते हैं, तो अपने आप धनराशि आपके बचत खाते में घटती-बढ़ती रहती है। जाहिर है, ऑन लाइन ट्रेडिंग के लिए आपको एक इंटरनेट कनेक्शन की भी जरूरत होती है, ताकि आप जब चाहें, अपने शेयर खरीद-बेच सकें या उनके भाव देख सकें। ऑनलाइन ट्रेडिंग में आप एक दिन पहले भी अपने शेयर खरीदने या बेचने का ऑर्डर डाल सकते हैं। इसके अलावा अगर आपने आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में डीमैट अकाउंट खोला है, तो आपको उनकी वेबसाइट पर बहुत सी उपयोगी जानकारी भी मिलती है, जैसे महत्वपूर्ण खबरें, कंपनी रिसर्च, शेयर खरीदने की सलाह आदि।

शेयर खरीदने या बेचने की प्रक्रिया को ट्रेडिंग कहा जाता है। ट्रेडिंग के दो सबसे लोकप्रिय प्रकार हैं - डे-ट्रेडिंग (day-trading) और डिलिवरी पर आधारित ट्रेडिंग (delivery-based trading)। डे-ट्रेडिंग में आप जिस दिन शेयर खरीदते हैं, उसी दिन बेच देते हैं। आपको उसी दिन अपना हिसाब बराबर करना होता है, चाहे आपको फायदा हो रहा हो या नुकसान। दूसरी तरफ, डिलिवरी पर आधारित ट्रेडिंग में आप शेयर खरीदकर अपने पास रख लेते हैं और उसके भाव बढ़ने का इंतजार करते हैं। डे-ट्रेडिंग और डिलिवरी पर आधारित ट्रेडिंग में सफलता के सूत्र अलग-अलग हैं। डे-ट्रेडिंग में खबरों और अफवाहों का बहुत महत्व होता है, जबकि डिलिवरी पर आधारित ट्रेडिंग में कंपनी की दीर्घकालीन प्रगति का महत्व होता है। डे-ट्रेडिंग में तकनीकी विश्लेषण (technical analysis) का बहुत महत्व होता है, जबकि डिलिवरी पर आधारित ट्रेडिंग में आधारभूत विश्लेषण (fundamental analysis) का महत्व होता है। जाहिर है, डे-ट्रेडिंग ज़्यादा खतरनाक है और इसमें ज़्यादा समय भी लगता है, क्योंकि बाजार के उतार-चढ़ाव की पल-पल खबर इसमें महत्वपूर्ण बन जाती है। डे-ट्रेडिंग करने वाले के पास एक चीज नहीं होती है, जो डिलिवरी पर आधारित ट्रेडिंग करने वाले के पास होती है - और वह चीज है समय।

आम तौर पर सेंसेक्स की 30 कंपनियों और निफ्टी की 50 कंपनियों के शेयर सबसे सुरक्षित और प्रतिष्ठित माने जाते हैं। निवेशकों की सुविधा के लिए बी.एस.ई. में कंपनियों के अलग-अलग वर्ग बना दिए गए हैं, जिनसे कंपनियों को एक नजर में पहचाना जा सकता है। ए ग्रुप में सबसे सुदृढ़, समृद्ध और प्रतिष्ठित कंपनियाँ आती हैं। उनसे नीचे बी 1 ग्रुप की कंपनियाँ और उनसे नीचे बी 2 ग्रुप की कंपनियाँ। टी. ग्रुप की कंपनियाँ थोड़ी खतरनाक मानी जाती हैं, इसीलिए सिर्फ जानकार लोगों को ही उनमें निवेश करने का जोखिम लेना चाहिए। एस. ग्रुप में छोटी कंपनियाँ होती हैं। टी.एस. ग्रुप में जोखिम वाली छोटी कंपनियाँ आती हैं। और अंत में झेड ग्रुप में ऐसी कंपनियाँ आती हैं, जिन्होंने एक्सचेंजों के निर्देशों का पालन नहीं किया है। झेड ग्रुप की कंपनियों में निवेश करने से बचना ही चाहिए, क्योंकि ये कंपनियाँ कभी भी सस्पेंड हो सकती हैं यानी इनके शेयरों की खरीदी-बिक्री बंद हो सकती है।

अगर आपको शेयर बाजार पर नजर रखना है, तो आपको एकोनॉमिक टाइम्स अखबार और दलाल स्ट्रीट पत्रिका से काफी मदद मिल सकती है। दलाल स्ट्रीट में आपको सभी अच्छी कंपनियों के पी.ई.रेशो, बुक वैल्यू, फेस वैल्यू, रिजल्ट, बिक्री, लाभ इत्यादि की जानकारी मिल जाएगी। स्टॉक एक्सचेंजों की वेबसाइट्स ([www.bseindia.com](http://www.bseindia.com), [www.nseindia.com](http://www.nseindia.com)) पर भी आपको कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिल जाती हैं।



# 1. शेयर बाजार में निवेश क्यों करें

शेयर बाजार कोई खेल नहीं है; यह तो धन के निवेश का माध्यम है। जैसा मशहूर निवेशक पीटर लिंच ने कहा है, 'हालाँकि कई बार हम यह भूल जाते हैं, लेकिन सच तो यह है कि किसी कंपनी का शेयर कोई लॉटरी का टिकट नहीं होता है... यह तो कंपनी में आंशिक स्वामित्व होता है।'

इस बात को अच्छी तरह से गाँठ बाँध लें कि शेयर बाजार कोई खेल या जुआ या सट्टा नहीं है, हालाँकि बहुत से लोग इसे इसी तरह से देखते और खेलते हैं। शेयर बाजार दो दिन में लखपति बनने का साधन भी नहीं है, हालाँकि ज्यादातर लोग इसमें इसी इरादे से आते हैं। शेयर बाजार तो मूलतः निवेश का एक माध्यम है। इसे एक तरह से बैंक जैसा मानें। जिस तरह आप बैंक के बचत खाते में अपना पैसा डालने के बाद हर दिन बैंक जाकर उसकी जाँच-पड़ताल नहीं करते हैं, उसी तरह आपको हर दिन अपनी कंपनी के शेयर के भाव की जाँच-पड़ताल भी नहीं करना चाहिए।

आम धारणा यह है कि शेयर बाजार में बहुत जोखिम होता है। ऐसा माना जाता है कि शेयर बाजार में निवेश करने का मतलब पैसे को आग लगाना है या कुएँ में डालना है। बहरहाल, ऐसा है नहीं। दरअसल शेयर बाजार उतना खतरनाक नहीं है, जितना कि इसे माना जाता है। यह सही है कि इसमें कुछ गड़बड़ियाँ हैं, लेकिन गड़बड़ियाँ कहाँ नहीं हैं। हर्षद मेहता या केतन पारीख जैसे लोगों की वजह से शेयर बाजार बदनाम हो जाता है, जबकि सच्चाई यह है कि उन्होंने जो कमाल दिखाया, उसका असर सिर्फ कुछ समय तक ही रहा। भारतीय शेयर बाजार की लोकप्रियता का सबूत यही है कि यह 20 साल में 15 गुनी प्रगति कर चुका है।

और सच तो यह है कि जोखिम कहाँ नहीं होता; जोखिम तो जीवन के हर मोड़ पर होता है। जोखिम तो सड़क पर गाड़ी चलाने में भी होता है, सड़क पार करने में भी होता है, क्रेडिट कार्ड रखने में भी होता है। जैसा मैल्कम फोर्ब्स ने कहा है, 'अगर आप कुछ हासिल करना चाहते हैं, तो आप जोखिम को पूरी तरह से खत्म नहीं कर सकते हैं।' मशहूर निवेशक वॉरेन बफेट की यह बात हमेशा याद रखें, 'जोखिम तो ईश्वर के खेल का हिस्सा है। यह इंसानों के लिए भी सही है और देशों के लिए भी।' अगर आपने सावधानी से कंपनी का चुनाव किया है, तो अल्पकालीन दृष्टि से तो जोखिम हो सकता है, लेकिन लंबे समय में आपको अच्छे परिणाम अवश्य मिलेंगे।

आइए देखें कि शेयर बाजार में निवेश करना क्यों उचित है?

1 **बचत खातों पर कम ब्याज :** अगर आप अपना पैसा बचत खाते में जमा करते हैं, तो आपको उस पर 4 प्रतिशत की दर से ब्याज मिलता है। आपको लगता है कि आपका पैसा बढ़ रहा है। लेकिन यह सच नहीं है, क्योंकि इस दौरान महँगाई 7 प्रतिशत से भी ज्यादा बढ़ चुकी है और आपकी पूँजी का अवमूल्यन हो चुका है। बचत खाते में रखे पैसे का मूल्य धीरे-धीरे कम होता जाता है, हालाँकि उस तरफ हमारा ध्यान जाता ही नहीं है।

2 **जमीन खरीदने में भी इतना लाभ नहीं :** निवेश का एक तरीका जमीन-जायदाद खरीदना भी है। बहरहाल, पहले यह जितना लाभकारी निवेश था, अब नहीं रहा, क्योंकि अब इसमें टैक्स और रजिस्ट्री के खर्च बढ़ गए हैं। वैसे भी, जमीन-जायदाद खरीदना शेयर खरीदने से बहुत जटिल काम है। इसमें कानूनी दाँवपेंच और धोखाधड़ी की संभावना बहुत ज्यादा होती है। इसके अलावा, इसमें व्यक्तिगत कौशल या निपुणता की आवश्यकता होती है, शासकीय बाधाएँ होती हैं और नियमन करने वाला कोई सार्वजनिक मंच नहीं होता है।

3 **सोना खरीदने में भी इतना लाभ नहीं :** सोना खरीदना भी निवेश का एक प्रकार है। बहरहाल, इसमें समस्या यह है कि जब आप पुराना सोना बेचने जाएँगे, तो उसमें से 10 प्रतिशत तो सफाई या मिलावट के नाम पर कम कर दिया जाएगा। हालाँकि सोना खरीदना पारंपरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, क्योंकि ऐसा माना

जाता था कि यह वक्त-जरूरत काम आएगा, बहरहाल अब कर्ज मिलने के इतने सारे आसान साधन हो चुके हैं कि यह जरूरत खत्म सी हो चली है। उल्टे सोने की सुरक्षा करना बहुत महँगा सौदा हो चला है। यकीन न हो, तो बैंक लॉकर खोलकर देख लें। ऐसे आभूषणों का क्या लाभ, जो बैंक लॉकर की शोभा बढ़ाते रहें या जिन्हें पहनने पर कान कटने या गला कटने का खतरा हो।

4 **डिविडेन्ड : शेयर बाजार के लाभकारी होने के दो कारण हैं :** पहला डिविडेन्ड मिलना, दूसरा शेयर का भाव बढ़ना। हर बड़ी शेयर कंपनी अपने शेयर होल्डर्स को डिविडेन्ड देती है, जो कमोबेश आपके बचत खाते के ब्याज की तरह होता है। इसका मतलब यह हुआ कि अगर आप शेयर खरीदने के बाद उसे न बेचें, तब भी आपको हर साल आमदनी होती रहेगी।

इस बात का ध्यान रखें कि आम तौर पर सरकारी कंपनियों या सार्वजनिक उपक्रमों (public sector units) में ज़्यादा डिविडेन्ड मिलता है। इसका कारण यह है कि उनमें सरकार की हिस्सेदारी सबसे ज़्यादा होती है, इसलिए डिविडेन्ड से सरकार को सबसे ज़्यादा लाभ होता है। यह डिविडेन्ड बजट घाटे को कम करने में बड़ा काम आता है। ओ.एन.जी.सी., तेल कंपनियाँ, स्टील एथॉरिटी ऑफ इंडिया (सेल), शिपिंग कॉरपोरेशन इत्यादि में डिविडेन्ड ज़्यादा मिलता है, हालाँकि पी.एस.यू. सेक्टर के शेयरों के भाव तुलनात्मक रूप से कम तेजी से बढ़ते हैं।

5 **डिविडेन्ड पर आयकर नहीं लगता है :** शेयर बाजार में निवेश करने का एक लाभ यह है कि इसमें मिलने वाले डिविडेन्ड पर आपको कोई टैक्स नहीं देना पड़ता है। टैक्स कंपनी देती है। इस तरह से आपका डिविडेन्ड करमुक्त होता है। जबकि अन्य किसी भी निवेश में मिलने वाले ब्याज पर आपको आयकर चुकाना पड़ता है।

6 **मुनाफावसूली पर आयकर की दर कम होती है :** अगर आप किसी शेयर को खरीदने के एक साल के भीतर बेच देते हैं, तो आपको उस पर सिर्फ 10 प्रतिशत आयकर ही देना पड़ता है, जबकि अन्य निवेशों में आपको 20 प्रतिशत आयकर देना होगा। आपकी मुनाफावसूली अल्पकालीन पूँजी लाभ (short term capital gains) के अंतर्गत आती है, जिससे आप पर कम टैक्स लगता है।

7 **टैक्स की बचत :** शेयर बाजार में अगर आप किसी मीच्चुअल फंड के माध्यम से निवेश करना चाहते हैं, तो आपके पास टैक्स बचाने की कई योजनाओं के विकल्प होते हैं। जीवन बीमा के यूनिट लिंक्ड प्लान्स या टैक्स सेविंग प्लान्स में निवेश करके आप एक तीर से दो शिकार करते हैं। आप जीवन बीमा का लाभ भी लेते हैं और शेयर बाजार में निवेश करने का लाभ भी ले लेते हैं।

8 **शेयर बाजार सबसे लाभकारी निवेश है :** इतना ज़्यादा फायदा कहीं और नहीं होता है। इस बात पर गौर करें कि आप जिस पी.पी.एफ. या जी.पी.एफ. में पैसा डाल रहे हैं, वह भी तो अंततः शेयर बाजार में निवेश करने के लिए विवश है। अब तो हालत यह हो गई है कि आप चाहे जहाँ भी पूँजी का निवेश करें, अंततः वह शेयर बाजार में लगना ही है। शेयर बाजार में आपकी पूँजी जितनी तेजी से बढ़ सकती है, उतनी तेजी से कहीं नहीं बढ़ सकती।

9 **शेयर के भाव बढ़ना :** डिविडेन्ड का लाभ तो नाम मात्र का है, शेयर बाजार का असली लाभ तो कंपनी के शेयर के भाव बढ़ना है। जब आपकी कंपनी प्रगति करती है और इसके वित्तीय परिणाम बेहतर होते जाते हैं, तो इसके शेयर का भाव भी बढ़ता जाता है। इसके उदाहरण देखें। 19 अप्रैल 2005 को एस. कुमार्स नेशनवाइड कंपनी के शेयर का भाव 19 रुपए था। अगर आपने उस दिन यह शेयर खरीद लिया होता, तो 16 सितंबर 2005 को आप उसे 59 रुपए के भाव पर बेच सकते थे। इस तरह आपका पैसा मात्र पाँच महीने में तीन गुना हो गया होता, जो किसी भी अन्य निवेश से बेहतर है। इसी तरह 7 अप्रैल 2005 को अशोक लीलैंड कंपनी के शेयर का भाव 21 रुपए

था। अगर आपने उस दिन यह शेयर खरीद लिया होता, तो दिसंबर 2005 में आप उसे 33 रुपए के भाव पर बेच सकते थे। जरा खुद ही सोचिए, इतना फायदा और किस निवेश में हो सकता है?

10 **रोमांच :** शेयर बाजार में निवेश करने का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि यह रोमांचक भी है। रीन रिचकिन ने इसके रोमांच का वर्णन करते हुए कहा है, 'मुझे शनिवार और रविवार पसंद नहीं हैं, क्योंकि इन दिनों शेयर बाजार बंद रहता है।' प्रख्यात अमेरिकी निवेशक डोनाल्ड ट्रम्प ने इसे इस तरह से कहा है, 'धन मेरे लिए कभी बहुत बड़ी प्रेरणा नहीं रहा। यह तो सिर्फ स्कोर जानने का तरीका है। असली रोमांच तो इस खेल को खेलने में है।'

अगर आपको शेयर बाजार में निवेश करने में लाभ दिख रहा हो, तो इस बारे में कुछ करने का फैसला करें। सिर्फ यार-दोस्तों से बातें करके ही इस मामले को खत्म न कर लें। भले ही शुरुआत में आप कम धनराशि का निवेश करें, लेकिन शुरुआत कर दें और उसकी दीर्घकालीन योजना बना लें। जैसा वाल्ट डिजनी ने कहा था, 'सफलता की यात्रा शुरू करने का तरीका यह है कि बात करना बंद करें और काम करना शुरू करें।'

## 2. निवेश करने से पहले क्या सावधानियाँ बरतें

शेयर बाजार में सबसे ज़्यादा जोखिम उन लोगों को होता है, जो कम समय में ढेर सारा पैसा कमाना चाहते हैं। अल्पकालीन निवेशक के लिए शेयर बाजार हमेशा जोखिम भरा होता है। दीर्घकालीन निवेशक के लिए तुलनात्मक रूप से शेयर बाजार में कम जोखिम होता है, क्योंकि चाहे शेयर बाजार लुढ़के या भूकंप आए, उसके प्रभाव ज़्यादा समय तक नहीं रहते हैं। समझदार निवेशक जोखिमों को जानता है और उनसे निबटने की तैयारी कर लेता है। जैसा पीटर लिंच कहते हैं, 'मंदियाँ आती हैं और शेयर बाजार गिरते हैं। जब तक आप इस बात को नहीं समझ लेंगे, तब तक आप शेयर बाजार में उतरने के लिए तैयार नहीं है और तब तक आप इसमें सफल भी नहीं हो पाएँगे।' शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको इन बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1. अपने लक्ष्य स्पष्ट रखें : ऐसे लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा होती है, जो फटाफट अमीर बनने के चक्कर में शेयर बाजार में आते हैं। वे इस तरह की खबरें पढ़ते या सुनते हैं कि अमुक कंपनी के शेयर के भाव एक महीने में दुगुने हो गए हैं और इसी तरह के विचारों की बदौलत वे शेयर बाजार में आते हैं। शेयर खरीदते समय ऐसे लोग अफवाहों या टिप्स पर भरोसा करते हैं और बाद में पछताते हैं।

शेयर बाजार में उतरते समय आपके सामने एक स्पष्ट लक्ष्य होना चाहिए कि आप शेयर बाजार से क्या चाहते हैं। आम तौर पर आपका लक्ष्य यह होना चाहिए कि आप अपनी जमापूँजी पर प्रति वर्ष 15 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक लाभ कमाना चाहते हैं। जाहिर है, अगर आपको पोस्ट ऑफिस में सिर्फ 11 प्रतिशत ब्याज मिल रहा है, तो शेयर बाजार से एक साल में 20 प्रतिशत लाभ मिलना पर्याप्त होना चाहिए। अफसोस की बात यह है कि लोग एक दिन में 20 प्रतिशत लाभ कमाने का लक्ष्य रखते हैं। अपने लक्ष्य स्पष्ट और तर्कपूर्ण रखें। अगर आपके लक्ष्य स्पष्ट होंगे, तो आप कभी लोभ में फँसकर अपनी जमापूँजी को गलत कंपनी में डालने का जोखिम नहीं लेंगे।

2. छह महीने का घर-खर्च बचत खाते में सुरक्षित रखें : अल्पकालीन दृष्टि से शेयर बाजार पर भरोसा नहीं किया जा सकता। हो सकता है इसमें मंदी का दौर आ जाए और आपकी कंपनी के शेयर का भाव छह महीने तक गिरता रहे। इस जोखिम से निबटने का तरीका यह है कि शेयर बाजार में सिर्फ वही पूँजी लगाएँ, जिसकी आपको तत्काल जरूरत नहीं है। अपनी पूरी बचत शेयर बाजार में न लगाएँ। छह महीने के घर-खर्च को बचत खाते में अलग से सुरक्षित रख दें, ताकि तात्कालिक जरूरतों के लिए आपको अपने शेयर हड़बड़ी में न बेचने पड़ें। यह याद रखें कि जल्दबाजी में शेयर बेचने पर आपको नुकसान हो सकता है, इसलिए शेयर बाजार में सिर्फ वही पैसा लगाएँ, जो अतिरिक्त (surplus) हो।

3. आपातकालीन रिजर्व फंड अलग रखें : अक्सर ऐसा होता है कि हम जोश में आकर ढेर सारी कंपनियों के शेयर खरीद लेते हैं और यह आशा करते हैं कि कुछ दिनों या हफ्तों में हमें ढेर सारा मुनाफा होगा। लेकिन शेयर बाजार लुढ़क जाता है और जिस शेयर को हमने 50 रुपए के भाव पर खरीदा था, वह 40 रुपए का हो जाता है। हम चाहते हैं कि उस कंपनी के और शेयर खरीदकर एवरेजिंग कर लें, लेकिन हमारे पास खरीदने के लिए पैसे ही नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति के लिए आदर्श नीति यह है कि आपके पास शेयर बाजार के लिए आपातकालीन रिजर्व फंड अलग होना चाहिए, जो शेयर बाजार के गिरने की दशा में आपके काम आए।

आदर्श स्थिति तो यह है कि आप अपनी निवेश पूँजी का 40 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व फंड में रखें। यानी अगर आप शेयर बाजार में एक लाख रुपए का निवेश करना चाहते हैं, तो शुरुआत में सिर्फ 60,000 रुपए के ही शेयर खरीदें

और 40,000 रुपए रिजर्व फंड में अलग रख दें। याद रखें, शेयर बाजार का कोई भरोसा नहीं होता है और यह किसी भी समय लुढ़क सकता है। इसलिए एवरेजिंग के स्वर्णिम नियम का लाभ उठाने के लिए रिजर्व फंड तैयार रखें। जैसा विख्यात निवेशक पीटर लिंग कहते हैं, 'जब किसी कंपनी का शेयर आकर्षक दिखता है, तो आप उसे खरीद लेते हैं। निश्चित रूप से उसका भाव और भी गिर सकता है। मैंने 12 डॉलर के भाव पर ऐसी कंपनियों के शेयर खरीदे हैं, जो 2 डॉलर तक नीचे गए, लेकिन बाद में वे 30 डॉलर तक ऊपर भी गए। आप किसी तरह यह पता नहीं लगा सकते हैं कि कोई शेयर अपने न्यूनतम भाव पर कब पहुँच गया है।'

अगर आपके पास आपातकालीन रिजर्व फंड है, तो 15-20 प्रतिशत भाव गिरने पर अपनी कंपनी की एवरेजिंग कर लें, यानी अगर आपने किसी कंपनी का शेयर 50 रुपए में खरीदा था और किसी कारण उसका भाव 15 प्रतिशत गिरकर 43 रुपए के आस-पास आ जाए, तो उस कंपनी के उतने ही शेयर दोबारा खरीद लें। बहरहाल, एवरेजिंग तभी करें, जब आपने कंपनी को सावधानी से चुना हो और आपको उसकी सफलता पर पूरा भरोसा हो। अफवाहों के आधार पर खरीदे गए शेयरों में एवरेजिंग करने से फायदा नहीं, बल्कि नुकसान होता है, क्योंकि आप उनमें अपना और पैसा फँसा लेते हैं। एवरेजिंग का सिद्धांत सिर्फ अच्छी कंपनियों के क्षेत्र में ही कारगर होता है। यह भी ध्यान रखें कि एवरेजिंग दीर्घकालीन निवेश में लाभकारी होती है, जबकि अल्पकालीन निवेश में एवरेजिंग के बजाय स्टॉप लॉस ज्यादा कारगर होता है।

4. अपनी भावनाओं पर काबू रखें : शेयर बाजार में भावनाएँ ही इंसान की सबसे बड़ी दुश्मन होती हैं : खास तौर पर लोभ और दहशत की भावनाएँ। जब शेयर बाजार चढ़ता है, तो ऐसा लगता है कि यह कभी गिरेगा ही नहीं। इसलिए लोभ में आकर निवेशक महँगे दामों पर शेयर खरीद लेता है और बाद में पछताता है। इसी तरह जब शेयर बाजार गिरता है, तो ऐसा लगता है, जैसे यह कभी उठेगा ही नहीं। इसलिए दहशत में आकर निवेशक अपने शेयर घाटे में बेच देता है और बाद में पछताता है। अक्सर हम अपने ही गलत निर्णयों के कारण नुकसान उठाते हैं और किस्मत को दोष देने लगते हैं। जैसा लॉ फोन्टेन ने कहा है, 'हम हमेशा अच्छी बातों का श्रेय तो खुद ले लेते हैं, जबकि बुरी बातों का दोष किस्मत को देने लगते हैं।'

शेयर बाजार गिरते समय ज्यादातर निवेशक अपने शेयर बेचकर बाजार से बाहर निकलना चाहते हैं। लेकिन समझदार और संयमी शेयरहोल्डर जानता है कि गिरता बाजार शेयर खरीदने का सबसे अच्छा मौका देता है। बाजार गिरने से न घबराएँ। जब बाकी लोग दहशत में आकर ताबड़तोड़ बिकवाली कर रहे हों, तो अपनी भावनाओं पर संयम रखें। अगर लंदन में हुए बम विस्फोट के कारण बाजार गिर रहा है, तो आपको यह सोचना चाहिए कि इससे आपकी कंपनी की प्रगति पर जरा भी फर्क नहीं पड़ेगा, इसलिए कुछ समय बाद आपकी कंपनी का शेयर दोबारा उसी जगह पर लौट आएगा। जैसा वॉरेन बफेट ने कहा है, 'अगर कोई कंपनी अच्छी तरह चली रही है, तो शेयर की कीमत अंततः बढ़ती ही है।'

बहरहाल, अगर आप दहशत और लोभ की भावनाओं पर काबू न रख सकते हों, तो बेहतर यही होगा कि आप शेयर बाजार में खुद निवेश न करें, बल्कि किसी अच्छे मीच्युअल फंड या जीवन बीमा के यूनिट-लिंक्ड प्लान के माध्यम से निवेश करें। डॉन हेज की यह बात हमेशा याद रखें, 'शेयर बाजार में भावनाएँ आपकी सबसे बड़ी दुश्मन होती हैं।'

5. बहुत सारी कंपनियों के शेयर न खरीदें : शेयर बाजार के अंधे को हर तरफ हरा ही हरा दिखता है। उसे ज्यादातर कंपनियाँ हीरों की खान की तरह नजर आती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि नौसिखिया व्यक्ति बहुत सारी कंपनियों के शेयर खरीद लेता है। पत्र-पत्रिकाओं में जिस भी कंपनी के शेयर खरीदने की सलाह दी जाती है, वह उन सबको खरीदने की कोशिश करता है। जहाँ भी वह कोई टिप या अफवाह सुनता है, उसका मन शेयर खरीदने या बेचने के लिए लालायित हो जाता है। दूसरी ओर, शेयर बाजार का अनुभवी खिलाड़ी चुनिंदा कंपनियों के शेयर ही खरीदता है। वह दस कंपनियों के दस-दस शेयर खरीदने के बजाय दो कंपनियों के पचास-पचास शेयर खरीदना पसंद करता है, क्योंकि इसी नीति से ज्यादा लाभ होता है।

हर समझदार निवेशक अपना पोर्टफोलियो बनाता है और अपने निवेश का रिकॉर्ड रखता है। पोर्टफोलियो का

मतलब यह है कि आप कुछ कंपनियाँ चुन लेते हैं, जिनके शेयर आप खरीदना चाहते हैं। पोर्टफोलियो बनाने का लाभ यह होता है कि आप अनाप-शनाप खरीदारी नहीं करते हैं, बल्कि चुनिंदा कंपनियों के शेयर ही खरीदते हैं। आपके पोर्टफोलियो में कितनी कंपनियाँ हों, यह आपके बजट के हिसाब से तय होना चाहिए। बड़े निवेशकों के पोर्टफोलियो में आम तौर पर दस कंपनियाँ होती हैं। समय-समय पर परिस्थिति के अनुसार आपको अपना पोर्टफोलियो बदलते रहना चाहिए। बहरहाल, अनावश्यक रूप से बार-बार अपना पोर्टफोलियो न बदलें। अपने निवेश को कुछ कंपनियों तक ही सीमित रखें। जैसा जोश बिलिंग्स ने कहा है, 'डाक टिकट की तरह बनें - किसी एक चीज से तब तक चिपके रहें, जब तक कि आप सफल न हो जाएँ।'

पोर्टफोलियो बनाने का मोटा सूत्र यह है कि अगर आपके निवेश का बजट 50,000 है, तो दो-तीन कंपनियों के शेयर ही खरीदें। अगर आपका बजट एक लाख रुपए है, तो पाँच कंपनियों के शेयर खरीदें। यह बात याद रखें कि पोर्टफोलियो में कंपनियाँ जितनी कम होंगी, उतना ही अच्छा है। दो-तीन कंपनियों का अध्ययन और विश्लेषण करना आसान है, जबकि बीस-तीस कंपनियों का अध्ययन और विश्लेषण करना बहुत मुश्किल है। जैसा पीटर लिंग ने कहा है, 'यह बात गलत है कि शेयर खरीदने के लिए हर सप्ताह साठ घंटे कंपनियों का विश्लेषण करना जरूरी है। पैसा कमाने के लिए आपको सिर्फ गिने-चुने शेयरों की ही जरूरत होती है। अगर आप एक साल में एक कंपनी चुन सकते हैं, तो इतना ही काफी है। जब मैं मैग्लेन फंड चला रहा था, तो मुझे हर हफ्ते एक कंपनी चुननी पड़ती थी, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि मेरे पास बिलियनों डॉलर थे। आम आदमी को तो पूरी जिंदगी में सिर्फ गिनी-चुनी अच्छी कंपनियों की ही जरूरत होती है।'

6. हर महीने निवेश करें : शेयर बाजार में उसी को निवेश करना चाहिए, जिसके पास अतिरिक्त धन हो, यानी वह हर महीने धन बचा सकता हो। शुरू में ही यह योजना बना लें कि आप हर महीने शेयर बाजार में कितनी धनराशि का निवेश करेंगे। हर महीने उतनी धनराशि का निवेश कर दें। इस तरह शेयर बाजार में आपका निवेश बढ़ता है, आपकी पूँजी बढ़ती है और आपकी बचत भी बढ़ती है। बहरहाल, यह ध्यान रखें कि हर महीने शेयर बाजार में निश्चित धनराशि के निवेश का यह मतलब नहीं है कि हर महीने शेयर खरीदना जरूरी है। आप उस पैसे को आपातकालीन रिजर्व फंड में रख सकते हैं और शेयर खरीदने के लिए शेयर बाजार के गिरने का इंतजार कर सकते हैं। यह कभी न भूलें कि सिर्फ अच्छी कंपनी होना ही काफी नहीं है, उसके शेयर की सही कीमत होना भी जरूरी है। महँगे दामों पर शेयर खरीदने से अच्छा यह है कि आप पैसे अलग रखकर शेयर की कीमत कम होने का इंतजार करें। बहरहाल, हर महीने निवेश फंड में निश्चित धनराशि जमा करते रहें, क्योंकि जैसा मदर टेरेसा ने कहा है, 'दिए को जलाए रखने के लिए हमें इसमें तेल डालते रहना चाहिए।'

7. अफवाहों या टिप्स के चक्कर में न फँसें : शेयर बाजार में अक्सर इस तरह की अफवाहें उड़ती रहती हैं कि अमुक कंपनी का शेयर एक सप्ताह या एक महीने में बढ़ जाएगा। बहरहाल, जो लोग इस तरह की अफवाह फैलाते हैं, उनके अपने निहित स्वार्थ होते हैं। वे जान-बूझकर ऐसी अफवाहें फैलाते हैं, क्योंकि उनके पास उस कंपनी के शेयर पहले से ही होते हैं, जिन्हें वे भाव बढ़ने पर बेचकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में भोला-भाला निवेशक ही मूर्ख बनता है, जो अफवाह पर भरोसा करके महँगे दामों में एक ऐसी कंपनी का शेयर खरीद लेता है, जिसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता है। नॉर्मन आर. ऑगस्टिन कहते हैं, 'अगर शेयर बाजार के विशेषज्ञ सचमुच ही इतने बड़े विशेषज्ञ होते, तो वे सलाह नहीं दे रहे होते, बल्कि शेयर खरीद रहे होते।'

8. सिर्फ अच्छी कंपनियों के ही शेयर खरीदें : शेयर बाजार में उतरने वाले लोग काफी नुकसान उठाने के बाद यह सबक सीखते हैं कि अच्छी कंपनियों के शेयर खरीदने में ही समझदारी होती है। घटिया कंपनियों के शेयर सस्ते दामों पर मिल जाते हैं और कई बार तो उनमें बहुत फायदा भी हो सकता है, लेकिन दिक्कत यह होती है कि उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यह भी हो सकता है कि कल को वह कंपनी भाग जाए या दिवालिया हो जाए या सस्पेंड हो जाए या फ्राँड निकले। जो लोग इस तरह की संदिग्ध कंपनियों में निवेश करते हैं, वे अपनी पूँजी को बहुत बड़े जोखिम में डालते हैं और किसी भी तरह के घोटाले का सबसे पहला शिकार बनते हैं। वे यह

भूल जाते हैं कि शेयर बाजार तो सिर्फ आईना है; असली बात तो कंपनी है।

दूसरी तरफ, अगर आप सेंसेक्स या बी.एस.ई. की ए ग्रुप की कंपनियों या ब्लू चिप कंपनियों में निवेश करते हैं, तो आप इस बात का यकीन कर सकते हैं कि आपको डिविडेन्ड मिलेगा, आपकी कंपनी प्रगति करेगी और वह दिवालिया नहीं होगी। आम तौर पर यह माना जाता है कि 1000 रुपए का शेयर खरीदने से लाभ कम होगा और 1 रुपए का शेयर खरीदने से लाभ ज्यादा होगा। बहरहाल, जहाँ लाभ की संभावना ज्यादा है, वहाँ नुकसान की आशंका भी ज्यादा है। इसके अलावा, आपको यह भी सोचना चाहिए कि जिस कंपनी का शेयर 1 रुपए में मिल रहा है, उसकी स्थिति कैसी होगी। निश्चित रूप से फुटपाथ पर मिलने वाले सामान और शोरूम के सामान में कुछ तो फर्क होगा। चीनी कहावत है, 'मोती समुद्र किनारे नहीं बिखरे रहते हैं। अगर आपको मोती चाहिए, तो आपको इसके लिए गोता लगाना पड़ेगा।'

9. **डाइवर्सिफिकेशन :** शेयर बाजार का एक प्रचलित सिद्धांत डाइवर्सिफिकेशन है, यानी किसी एक सेक्टर या एक कंपनी में ही अपने पूरे धन का निवेश न करें, बल्कि अलग-अलग सेक्टरों या कंपनियों में निवेश करें, ताकि किसी एक सेक्टर या एक कंपनी के बुरे परिणाम से आपका निवेश पूरी तरह से प्रभावित न हो। बहरहाल, सीमा से ज्यादा डाइवर्सिफिकेशन होने पर सुरक्षा तो मिलती है, लेकिन ज्यादा लाभ नहीं होता है। मशहूर निवेशक वॉरेन बफेट डाइवर्सिफिकेशन के सिद्धांत पर बहुत ज्यादा भरोसा नहीं करते हैं। वे चुनिंदा कंपनियों के शेयर बहुत ज्यादा संख्या में खरीदते हैं। बहरहाल, यह न भूलें कि वॉरेन बफेट के पास कंपनियों का ज्ञान, शेयर बाजार की समझ और लंबा अनुभव है, जो आम निवेशकों के पास नहीं होता। इसलिए शेयर बाजार में आने वाले नए निवेशकों को शुरुआत में कम से कम एक साल तक डाइवर्सिफिकेशन के सिद्धांत का पूरी तरह पालन करना चाहिए। मशहूर फंड मैनेजर जॉन टेम्पलटन की सलाह को न भूलें, 'अपने निवेशों को डाइवर्सिफाई कर लें।'

दस कंपनियों के पोर्टफोलियो में डाइवर्सिफिकेशन का उदाहरण नीचे दिया गया है :

क्रमांक	कंपनी	सेक्टर	किस भाव पर खरीदना है	टारगेट प्राइस
1.	बी.एच.ई.एल.	मशीनरी	1150	1550
2.	सन फार्मास्यूटिकल्स	फार्मा	600	800
3.	अशोक लीलैंड	ऑटोमोबाइल	28	35
4.	एस. कुमार्स	टेक्सटाइल	50	95
5.	नवभारत फेरो एलॉयज	फेरो एलॉय	45	95
6.	इरा कंस्ट्रक्शन्स	कंस्ट्रक्शन	115	200
7.	चेन्नई पेट्रोलियम	रिफाइनरी	235	380
8.	स्टील एथॉरिटी (सेल)	स्टील	50	75
9.	टाटा टेली	टेलीकॉम	28	35
10.	गोल्डियम इंटरनेशनल	ज्वेलरी	55	110

10. **बेचने की योजना स्पष्ट रखें :** शेयर खरीदते समय आपको उसकी टारगेट प्राइस तय कर लेनी चाहिए, यानी आपको यह तय कर लेना चाहिए कि आप उसे कितने भाव पर बेचेंगे। अगर आप चाहें तो अलग-अलग टारगेट प्राइस भी तय कर सकते हैं। जैसे मान लें, आपने नवभारत फेरो एलॉयज कंपनी के 1000 शेयर 45 रुपए के भाव पर खरीदे हैं, तो आप यह तय कर सकते हैं कि आप इसके 200 शेयर 55 रुपए के भाव पर बेचेंगे, अगले 200 शेयर 65 रुपए के भाव पर बेचेंगे, अगले 200 शेयर 75 रुपए के भाव पर बेचेंगे, अगले 200 शेयर 85

रुपए के भाव पर बेचेंगे और अंतिम 200 शेयर 95 रुपए के भाव पर बेचेंगे। इस तरह की टारगेट प्राइस होने पर आप दहशत में बिकवाली करने से तो बचते ही हैं, साथ ही परिस्थिति आने पर एवरेजिंग के सिद्धांत का लाभ भी उठा सकते हैं।

वॉरेन बफेट जैसे बड़े-बड़े निवेशक कई गुना लाभ लेकर अपने शेयर बेचते हैं, जबकि आम निवेशक दस प्रतिशत फायदे में अपने शेयर बेच देते हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप कितने फायदे के बाद मुनाफावसूली करना चाहते हैं। बहरहाल, आपके पास अपने हर शेयर की टारगेट प्राइस होना चाहिए और आपको लोभ या दहशत में न आते हुए उस भाव पर अपने शेयर बेच देना चाहिए। समय-समय पर मुनाफावसूली अवश्य करते रहें, क्योंकि शेयर बाजार में आप मुनाफा कमाने के लिए ही तो आए हैं।



### 3. शेयर चुनने की 10 कसौटियाँ

अगर आप शेयर बाजार में निवेश करना चाहते हैं, तो सबसे पहले तो आपको कंपनी चुननी होगी। शेयर बाजार में बहुत सारी कंपनियाँ हैं, सवाल यह है कि आप किस कंपनी के शेयर खरीदें, ताकि आपकी पूँजी भी सुरक्षित रहे और आपको लाभ भी हो। वेबसाइटों ([www.moneycontrol.com](http://www.moneycontrol.com), [www.icicidirect.com](http://www.icicidirect.com)) और निवेश पत्रिकाओं (दलाल स्ट्रीट) में आपको दर्जनों कंपनियों के शेयर खरीदने की सलाह मिल जाएगी। आपको बहुत सारी कंपनियाँ आकर्षक लगती हैं और आपका मन होता है कि आप उन सबको खरीद डालें। बहरहाल, चूँकि आपकी पूँजी सीमित है, इसलिए आप हर दिन दर्जनों शेयर नहीं खरीद सकते हैं। जैसा पिछले अध्याय में बताया गया है, आपके पोर्टफोलियो में आम तौर पर 10 से ज़्यादा कंपनियाँ नहीं होना चाहिए।

सही कंपनी का चुनाव शेयर बाजार में सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आपका नफ़ा-नुकसान सेंसेक्स के उतार-चढ़ाव से नहीं, बल्कि कंपनी के शेयर के भाव से जुड़ा होता है। कंपनी को बहुत सावधानी से चुनें। यह ध्यान रखें कि अच्छी कंपनियों का पोर्टफोलियो बनाना ही सबसे मुश्किल काम होता है। शेयर खरीदने और बेचने का काम तो बहुत आसान होता है। किसी कंपनी को उतनी ही सावधानी से खरीदें, जितनी सावधानी से आप अपने लिए मकान खरीदते हैं। उसके हर पहलू को बारीकी से देखें, उसके गुण-दोषों का विश्लेषण करें, उसकी संभावनाओं को अच्छी तरह से टटोल लें। उसकी बैलेंस शीट और परिणामों का अध्ययन करना न भूलें।

अगर आपका लक्ष्य दीर्घकालीन निवेश है, तो शुरुआत में सिर्फ प्रतिष्ठित कंपनियों को ही चुनें, जिनके पास सफलता का पुराना रिकॉर्ड हो। आम तौर पर ऐसी कंपनियाँ बी.एस.ई. के ए समूह में आती हैं। आप सेंसेक्स की 30 कंपनियों (इनकी सूची परिशिष्ट 1 में दी गई है) या निफ्टी की 50 कंपनियों (इनकी सूची परिशिष्ट 2 में दी गई है) में से भी कंपनी चुन सकते हैं, क्योंकि ये सभी कंपनियाँ बहुत ही सुदृढ़ और प्रतिष्ठित हैं। कंपनी चुनते समय आपको लोभ में नहीं फँसना चाहिए। शेयर बाजार से आप क्या चाहते हैं, यह लक्ष्य अपने दिमाग में स्पष्ट रखें। यह बात कभी न भूलें कि आपका लक्ष्य एक माह में अपना पैसा दोगुना करना नहीं है, बल्कि सामान्य से ज़्यादा दर पर व्याज कमाना है।

कंपनी का चुनाव करते समय निम्न बातें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, हालाँकि यह भी याद रखें कि किसी एक कसौटी के आधार पर ही शेयर चुनना समझदारी नहीं है और भविष्य की संभावनाओं पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। जब कंपनी कई कसौटियों पर खरी उतरे, तभी उसके शेयर खरीदना अच्छा होता है। शेयर चुनने की दस कसौटियाँ ये हैं :

1 पी.ई.रेशो : किसी शेयर को चुनते समय पी.ई. रेशो (Price/Earning Ratio) पर सबसे पहले ध्यान देना चाहिए। पी.ई. रेशो शेयर के भाव (price) और कंपनी की प्रति शेयर आमदनी (earnings per share) या ई.पी.एस. का अनुपात बताता है। मान लीजिए, स्टील एथॉरिटी ऑफ इंडिया (सेल) के शेयर का भाव 48 रुपए है और उसका ई.पी.एस. 16 रुपए है, तो इसका पी.ई. रेशो 3 होगा। पी.ई. रेशो का मतलब यह है कि आप जिस भाव पर शेयर खरीद रहे हैं, कंपनी आपके शेयर पर उतने रुपए कितने सालों में कमा सकती है। अगर पी.ई. रेशो 3 है, तो इसका मतलब यह है कि कंपनी अगर इसी गति से प्रगति करती रहे, तो वह 3 साल में आपके शेयर पर उतने रुपए कमा सकती है। आम तौर पर कम पी.ई.रेशो वाली कंपनियाँ दीर्घकालीन दृष्टि से ज़्यादा अच्छी मानी जाती हैं। बहरहाल, यह भी याद रखें कि पी.ई. रेशो कम होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि उस कंपनी का पुराना रिकॉर्ड तो अच्छा है, लेकिन उसकी भविष्य की संभावनाएँ धूमिल हैं। बहुत अच्छी कंपनियों का पी.ई. रेशो तुलनात्मक रूप से ज़्यादा होता है, क्योंकि उनकी विकास दर (growth rate) ज़्यादा होती है।

पी.ई. रेशो का ऐतिहासिक अध्ययन जरूरी है। हर सेक्टर की कंपनी का आदर्श पी.ई. रेशो अलग-अलग होता है।

हाई-टेक कंपनियों, फार्मा कंपनियों और एफ.एम.सी.जी. कंपनियों का पी.ई. रेशो आम तौर पर ज्यादा होता है, क्योंकि उनके विकास की दर या ग्रोथ रेट ज्यादा होती है। सॉफ्टवेयर कंपनी इन्फोसिस का पी.ई. रेशो 38 है, टी.सी.एस. का पी.ई. रेशो 36 है, फार्मा कंपनी डॉ. रेड्डीज का पी.ई. रेशो 47 है और हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का पी.ई. रेशो 36 है। इसी तरह उन कंपनियों का पी.ई. रेशो भी ज्यादा रहता है, जिनके विकास की दर ज्यादा होने की संभावना होती है, जैसे भारती टेली का पी.ई. रेशो 29 है। दूसरी तरफ, मेटल, ऑइल इत्यादि सेक्टरों की कंपनियों का पी.ई. रेशो काफी कम होता है। उदाहरण के लिए, टाटा स्टील का पी.ई. रेशो 5.6 है, स्टील एथॉरिटी ऑफ इंडिया का पी.ई. रेशो 3.4 है, चेन्नई पेट्रोलियम और बोंगाईगाँव रिफाइनरी के पी.ई. रेशो 5 के आस-पास हैं। इसी तरह, सार्वजनिक उपक्रमों यानी पी.एस.यू. सेक्टर के पी.ई. रेशो भी आम तौर पर कम होते हैं, जैसे ओ.एन.जी.सी. और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का पी.ई. रेशो 11 है तथा शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया का पी.ई. रेशो 3.6 है।

पी.ई. रेशो एक नजर में तस्वीर सामने रख देता है। इसे देखते ही आप यह जान जाते हैं कि किसी कंपनी का शेयर कंपनी की आमदनी की तुलना में कितना महंगा है और इसे कितने मूल्य पर खरीदना उचित होगा। एकोनाॅमिक टाइम्स या दलाल स्ट्रीट में कंपनियों के पी.ई. रेशो दिए रहते हैं। बहरहाल, यह न भूलें कि पी.ई. रेशो हर दिन बदलता है, क्योंकि शेयर के भाव हर दिन बदलते हैं। इसके अलावा, कंपनी के तिमाही या वार्षिक परिणामों से भी पी.ई. रेशो बदलता है।

**2 ग्रुप पोजीशन :** ग्रुप पोजीशन का मतलब यह है कि अपने ही सेक्टर की बाकी कंपनियों की तुलना में किसी कंपनी की क्या स्थिति है। उदाहरण के लिए स्टील सेक्टर में टाटा स्टील लीडर है, यही कारण है कि इसके शेयर का भाव थोड़ा ज्यादा होगा, लेकिन इसे खरीदना ज्यादा सुरक्षित भी रहेगा। जब आपको कोई सेक्टर आकर्षक लग रहा हो, तो सेक्टर की अग्रणी कंपनी के शेयर खरीदना हमेशा अच्छा होता है, क्योंकि उसकी विकास दर ज्यादा होने के कारण उसके शेयर के भाव ज्यादा बढ़ते हैं। इसके अलावा, चूंकि वह कंपनी अपने सेक्टर में अग्रणी होती है, इसलिए उसके शेयर के भाव ज्यादा समय तक गिरे नहीं रहते हैं। आई.टी.सी., रिलायंस, ओ.एन.जी.सी., टाटा स्टील, बी.एच.ई.एल. इत्यादि कंपनियाँ अपने सेक्टर में लीडर हैं।

**3 बुक वैल्यू :** किसी कंपनी के शेयर चुनते समय बुक वैल्यू का भी ध्यान रखना चाहिए। बुक वैल्यू का मतलब यह है कि किसी कंपनी के पास प्रति शेयर कुल कितनी मूर्त संपत्ति (physical assets) है। उदाहरण के लिए, अगर वी.बी.सी. फेरो एलॉयज की बुक वैल्यू 345 रुपए है, जबकि इसके शेयर का भाव 150 रुपए है, तो इसका मतलब यह है कि कंपनी का शेयर खरीदने लायक है, क्योंकि कंपनी के पास शेयर के भाव से दुगुनी संपत्ति है। लेकिन ध्यान रहे, बुक वैल्यू सिर्फ कंपनी की मूर्त संपत्ति बताती है। हाई-टेक कंपनियों में बुक वैल्यू का कोई खास महत्व नहीं होता, क्योंकि इनकी प्रगति में मूर्त संपत्ति महत्वपूर्ण नहीं होती है। जो कंपनियाँ बहुत प्रतिष्ठित होती हैं, उनकी बुक वैल्यू अपेक्षाकृत कम होती है, जैसे हीरो होंडा की बुक वैल्यू 57 है, जबकि इसके शेयर का भाव इससे पंद्रह गुना ज्यादा है। बहरहाल, सामान्य नियम यह है कि बुक वैल्यू जितनी ज्यादा हो, उतना ही अच्छा होता है।

**4 डिविडेन्ड :** हर साल डिविडेन्ड देने वाली कंपनियों के शेयर खरीदना लाभकारी होता है, क्योंकि डिविडेन्ड पर टैक्स नहीं लगता है और डिविडेन्ड एक तरह से ब्याज का काम करता है। सभी प्रतिष्ठित कंपनियाँ डिविडेन्ड देती हैं और अधिकांश सफल कंपनियाँ तो साल में दो बार डिविडेन्ड देती हैं। खास तौर पर सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियाँ ज्यादा डिविडेन्ड देती हैं, क्योंकि सरकार उनमें सबसे बड़ी हिस्सेदार होती है, इसलिए वह उनसे ज्यादा डिविडेन्ड की माँग करती है, ताकि उसका बजट घाटा कम हो जाए। इन कंपनियों में निवेश करने से डिविडेन्ड का ज्यादा लाभ होता है, हालाँकि इनके शेयर का भाव निजी कंपनियों जितनी तेजी से नहीं बढ़ता है। निष्क्रिय निवेशक शेयर चुनते समय डिविडेन्ड का विशेष ध्यान रखते हैं, क्योंकि वे बाजार में बार-बार खरीद-फरोख्त करने में रुचि नहीं रखते हैं।

5. **ऑर्डर बुक :** कंपनी की ऑर्डर बुक की स्थिति भी शेयर को चुनने का एक महत्वपूर्ण आधार है। अगर कंपनी की ऑर्डर बुक भरी है यानी कंपनी के पास अगले कई सालों के लिए पर्याप्त ऑर्डर हैं, तो यह माना जाता है कि कंपनी की हालत बहुत अच्छी है और वह भविष्य में बहुत तरक्की करेगी, क्योंकि उसे अपना माल या सेवाएँ बेचने की कोई कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। इस मामले में बी.एच.ई.एल., एल. एंड टी., नागार्जुन कंस्ट्रक्शन्स इत्यादि कंपनियाँ बहुत आगे हैं, जिनके पास अगले कई साल की ऑर्डर बुक भरी हुई है।

6. **करेन्ट रेशो :** कंपनी की आर्थिक स्थिति कैसी है, यह भी शेयर चुनते समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए यह जानना जरूरी है कि उसकी लिक्विडिटी कैसी है, यानी वह अपने आर्थिक दायित्वों को पूरा करने में कितनी समर्थ है। अगर कंपनी अपने खर्च उठाने में समर्थ नहीं है, तो उसे अपनी महत्वपूर्ण संपत्तियाँ बेचना पड़ सकती हैं और आगे चलकर वह दिवालिया भी हो सकती है। करेन्ट रेशो से यह जाँचा जाता है कि कंपनी की वर्तमान संपत्तियाँ इसके आगामी एक वर्ष के दायित्वों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं या नहीं। आदर्श स्थिति में करेन्ट रेशो 1 के आसपास होना चाहिए। यह ज़्यादा कम नहीं होना चाहिए, हालाँकि प्रतिष्ठित कंपनियाँ कई बार इस अनुपात को जान-बूझकर कम रखती हैं, ताकि वे अपनी संपत्ति का प्रभावकारी उपयोग या निवेश कर सकें।

7. **ऑपरेटिंग मार्जिन :** किसी भी बिजनेस में मार्जिन बेहद महत्वपूर्ण होता है, हालाँकि आम तौर पर उसकी तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता है। इस तरह की खबरें आम हैं कि हालाँकि इस वर्ष बिक्री 10 प्रतिशत बढ़ी, लेकिन निर्माण लागत बढ़ने के कारण मुनाफा कम हो गया। इसका कारण यह है कि मार्जिन घट गया। मार्जिन का सीधा सा मतलब यह है कि कंपनी एक यूनिट सामान बेचने पर जितना लाभ कमाती है, वह घट रहा है या बढ़ रहा है। मार्जिन जितना ज़्यादा होगा, कंपनी को उतना ही ज़्यादा लाभ होगा।

मार्जिन इतना महत्वपूर्ण है कि कई बार तो इसी से कंपनी की सफलता या असफलता तय होती है। निर्माण लागत बढ़ने पर मार्जिन कम हो जाता है। जब कंपनी अपने सामान की कीमत बढ़ाती है, तो उसका मार्जिन बढ़ जाता है। अगर कंपनी के सामान की अच्छी माँग है, तो कंपनी उसकी कीमत बढ़ाकर अपने मार्जिन को बरकरार रखती है, लेकिन अगर कंपनी के सामान की माँग ज़्यादा नहीं है, तो यह कीमत नहीं बढ़ा सकती है, इसलिए इसका मार्जिन कम हो जाता है।

8. **बिक्री/लाभ में प्रति वर्ष वृद्धि :** किसी कंपनी का शेयर खरीदते समय उसके पिछले रिकॉर्ड की जाँच भी करना चाहिए। अगर कंपनी की बिक्री और लाभ हर वर्ष बढ़ रहे हैं, तो उस कंपनी को विश्वसनीय माना जा सकता है। यह न भूलें कि अच्छी कंपनियों का रिकॉर्ड अच्छा होता है। अगर पाँच साल का रिकॉर्ड बताता है कि कंपनी की बिक्री और लाभ हर साल बढ़ रहे हैं, तो यह विश्वास किया जा सकता है कि वह भविष्य में भी प्रगति करेगी।

9. **52 वीक हाई/लो :** 52 वीक हाई/लो का मतलब यह होता है कि किसी शेयर का वर्ष में सबसे ऊँचा और नीचा भाव क्या रहा। कई दीर्घकालीन निवेशक शेयर खरीदते समय इसे बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं और 52 वीक लो के आस-पास शेयर खरीदना पसंद करते हैं। अगर किसी कंपनी के शेयर का भाव 52 वीक हाई पर है, तो इसका मतलब यह है कि इसके शेयर की माँग काफी है और इसका भाव पहले ही काफी बढ़ चुका है। दूसरी तरफ, अगर किसी कंपनी के शेयर का भाव 52 वीक लो पर है, तो इसका मतलब यह है कि इसके शेयर के भाव इस साल के सबसे निचले बिंदु पर हैं। वैसे तो इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन अच्छी कंपनियों के मामले में इसका कारण अक्सर यह होता है कि शेयर बाजार में वह सेक्टर इस समय लोकप्रिय नहीं है। 52 वीक लो के आस-पास अच्छी कंपनियों के शेयर खरीदने से लाभ की संभावना बढ़ जाती है, बशर्ते आप दीर्घकालीन निवेशक हों। हो सकता है अल्प काल में इस नीति से आपको ज़्यादा लाभ न हो, क्योंकि किसी भी सेक्टर को दोबारा लोकप्रिय होने में समय लगता है।

10. कैशफ्लो/रिजर्व : अगर किसी कंपनी का कैशफ्लो अच्छा है, तो उसके शेयर खरीदना अच्छा होता है। अच्छे कैशफ्लो का मतलब यह है कि कंपनी को बिजनेस से न सिर्फ अच्छी आमदनी हो रही है, बल्कि वह बचत भी कर रही है। अच्छे कैशफ्लो वाली कंपनियाँ अच्छा डिविडेन्ड देती हैं, शेयर बाई-बैक करती हैं, दूसरी कंपनियों को खरीदती हैं और पूँजी की कमी उनके व्यापार के विस्तार में कभी आड़े नहीं आती है।

## 4. शेयर बाजार के उठने या गिरने के 10 प्रमुख कारण

अक्सर अखबारों में यह खबर छपती है कि शेयर बाजार उछला या गिरा। आखिर शेयर बाजार क्यों गिरता या उठता है। जाहिर है, इसके बहुत से कारण होते हैं। किसी भी अन्य बाजार की तरह ही शेयर बाजार भी खरीदने और बेचने वालों की मानसिकता से प्रभावित होता है। अगर खरीदारों में खरीदने की ज्यादा प्रबल इच्छा होती है, तो शेयर बाजार उठ जाता है। अगर बेचने वालों में बेचने की ज्यादा प्रबल इच्छा होती है, तो शेयर बाजार लुढ़क जाता है। खरीदार ज्यादा हैं या बेचने वाले ज्यादा हैं, इससे भी शेयर बाजार की दिशा पर प्रभाव पड़ता है।

वैसे तो शेयर बाजार के उठने या गिरने के बहुत से कारण होते हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण देश की अर्थव्यवस्था होती है। अगर किसी देश की अर्थव्यवस्था बहुत अच्छी है और उसके अच्छी बने रहने की संभावना है, तो उस देश का शेयर बाजार बहुत अच्छी स्थिति में रहता है। दूसरी ओर, अगर देश की अर्थव्यवस्था अच्छी नहीं है या उसके निकट भविष्य में अच्छी न होने की आशंका है, तो उस देश का शेयर बाजार गिरेगा।

शेयर बाजार को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्न हैं :

1. **तात्कालिक खबर :** शेयर बाजार हर दिन करवट बदलता है। वह किस तरफ करवट बदलेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस दिन सकारात्मक खबरें ज्यादा हैं या नकारात्मक खबरें ज्यादा हैं। सकारात्मक खबरों के कारण शेयर बाजार उठता है, जबकि नकारात्मक खबरों के कारण शेयर बाजार गिरता है। उदाहरण के लिए, अगर यह खबर आती है कि भारत की जी.डी.पी. ग्रोथ 8 प्रतिशत रहेगी, तो शेयर बाजार उछल जाता है। अगर यह खबर आती है कि सरकार निजीकरण की दिशा में कदम उठा रही है, तो शेयर बाजार में उछाल आ जाता है। जबकि अगर इस तरह की खबर छपती है कि सरकार टैक्स बढ़ा रही है, तो शेयर बाजार गिर जाता है।
2. **विदेशी निवेशकों और मीच्युअल फंड्स का निवेश :** हाल में एफ.आई.आई. यानी विदेशी संस्थागत निवेशक (Foreign Institutional Investors) भारतीय शेयर बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे हैं। उनके खरीदारी करने पर शेयर बाजार उछल जाता है। उनके बिकवाली करने पर शेयर बाजार गिर जाता है। इसी तरह मीच्युअल फंड्स भी शेयर बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चूंकि मीच्युअल फंड बड़े पैमाने पर शेयर खरीदते-बेचते हैं, इसलिए उनके कारण भी बाजार उठता या गिरता है।
3. **राजनीतिक उथल-पुथल :** शेयर बाजार राजनीतिक स्थिरता को पसंद करता है, क्योंकि राजनीतिक स्थिरता के माहौल में ही कंपनियाँ प्रगति कर सकती हैं। यही वजह है कि राजनीतिक स्थिरता होने पर शेयर बाजार में तेजी रहती है। दूसरी तरफ, शेयर बाजार राजनीतिक अस्थिरता और अनिश्चितता को पसंद नहीं करता है, क्योंकि ऐसे माहौल में आर्थिक नीतियाँ सुनिश्चित नहीं होती हैं, अर्थव्यवस्था डावाँडोल होती है और कंपनियाँ अनिश्चय की स्थिति में होती हैं। नतीजा यह होता है कि राजनीतिक अस्थिरता के माहौल में शेयर बाजार गिर जाता है।
4. **विश्व के शेयर बाजार :** वैश्वीकरण के इस युग में शेयर बाजार पर विश्व की अर्थव्यवस्था का भी काफी प्रभाव पड़ता है। खास तौर पर अमेरिका की अर्थव्यवस्था भारतीय शेयर बाजार को प्रभावित करती है, क्योंकि सॉफ्टवेयर या सेवाओं के क्षेत्र में भारत का ज्यादातर निर्यात अमेरिका को ही होता है। यही वजह है कि नैस्डेक और डाऊ जोन्स के उठने या गिरने की वजह से भारतीय बाजार भी प्रभावित होते हैं। (पिछले दिन अमेरिकी

शेयर बाजार की स्थिति क्या थी, यह कई वेबसाइटों पर देखा जा सकता है, जैसे [www.moneycontrol.com](http://www.moneycontrol.com))। अमेरिकी शेयर बाजार का प्रभाव इसलिए भी पड़ता क्योंकि इन्फोसिस, विप्रो जैसी बड़ी-बड़ी भारतीय कंपनियाँ अमेरिकी शेयर बाजार में भी सूचीबद्ध हैं और अगर वहाँ उनकी कीमतें गिरती हैं, तो भारतीय शेयर बाजार में भी उनकी कीमतें आम तौर पर गिर जाती हैं।

5. **कूड ऑइल की कीमत :** कच्चे तेल या कूड ऑइल की कीमत का भी शेयर बाजार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अगर कूड ऑइल की कीमत बढ़ रही है, तो शेयर बाजार के गिरने की संभावना बढ़ जाती है, क्योंकि इसका अधिकांश कंपनियों पर बुरा असर होता है। इससे उनके सामान की उत्पादन लागत बढ़ जाती है और उन्हें या तो मजबूरन अपने सामान के दाम बढ़ाने पड़ते हैं या फिर कम मुनाफे में ही संतोष करना पड़ता है।

6. **मानसून :** हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि-प्रधान है और मानसून इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शेयर बाजार मई-जून में एक तरह से ठहर जाता है और मानसून की भविष्यवाणियों की राह देखता है। अगर अच्छे मानसून की भविष्यवाणी होती है और मानसून भी अच्छा होता है, तो शेयर बाजार चढ़ जाता है। मानसून खराब होने पर शेयर बाजार लुढ़क जाता है।

7. **सरकार की नीतियाँ :** सरकार की नीतियों से भी शेयर बाजार उछलता या गिरता है। अगर सरकार ड्यूटी या टैक्स में छूट देती है, तो शेयर बाजार चढ़ जाता है। अगर सरकार का बजट कंपनियों के लिए लाभकारी होता है, तो शेयर बाजार उछल जाता है। शेयर बाजार उदारीकरण, निजीकरण (privatisation) और वैश्वीकरण (globalisation) की दिशा में उठाए गए कदमों को पसंद करता है।

8. **ब्रोकर्स या पत्रिकाओं की सलाह :** शेयर बाजार ब्रोकर्स या पत्रिकाओं की सलाह से भी प्रभावित होता है। अगर ज्यादातर ब्रोकर्स शेयर बाजार के गिरने की आशंका व्यक्त करते हैं, तो बाजार में दहशत फैल जाती है। नतीजा यह होता है कि बिकवाली या मुनाफावसूली का जोर बढ़ने के कारण शेयर बाजार गिर जाता है। जबकि अगर ज्यादातर ब्रोकर्स शेयर बाजार के चढ़ने की संभावना व्यक्त करते हैं, तो खरीदारी का जोर बढ़ने के कारण शेयर बाजार चढ़ जाता है।

9. **महँगाई बढ़ने की दर :** महँगाई का अर्थव्यवस्था पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। जब महँगाई बढ़ती है, तो उत्पादन लागत बढ़ जाती है, माँग कम हो जाती है और कंपनी की बिक्री व मुनाफा कम हो जाता है। इसके अलावा, महँगाई बढ़ने से आयात-निर्यात का संतुलन भी प्रभावित होता है। अगर महँगाई बढ़ने की दर कम है, तो शेयर बाजार ऊपर चढ़ता है, जबकि अगर महँगाई बढ़ने की दर ज्यादा है, तो शेयर बाजार नीचे गिरता है।

10. **ब्याज दर और टैक्स :** कम ब्याज दर उद्योग जगत के लिए अच्छी होती है। कम ब्याज दर होने पर कंपनियाँ आसानी से पूँजी उगाह सकती हैं और विस्तार कर सकती हैं। अधिक ब्याज दर होने पर उत्पादन की कीमत बढ़ जाती है और कंपनियों का मुनाफा कम हो जाता है। इसी तरह, टैक्स की दर कम होना भी शेयर बाजार के लिए अच्छा है। टैक्स की दर कम होने पर लोगों के पास ज्यादा पैसा होगा, जिसका वे शेयर बाजार में निवेश कर सकेंगे।

## 5. कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ने के 20 प्रमुख कारण

कंपनियों के शेयर के भाव हर दिन घटते-बढ़ते हैं, लेकिन ऐसा अकारण नहीं होता है। शेयर के भाव घटने या बढ़ने के पीछे कारण होते हैं। मूल सिद्धांत यह है कि अगर कंपनी की भावी प्रगति की संभावना बढ़ती है, तो उसके शेयर का भाव भी बढ़ जाता है। यह याद रखना बेहद महत्वपूर्ण है कि शेयरों के भाव अतीत के बजाय भविष्य की प्रगति को ज्यादा महत्व देते हैं। अगर कोई कंपनी कोई ऐसा सौदा करती है, कोई ऐसा कदम उठाती है, कोई ऐसा काम करती है, जिससे उसका भावी लाभ बढ़ने की संभावना नजर आती है, तो उसके शेयर के भाव बढ़ जाते हैं।

पीटर लिंच कहते हैं, 'मुझे लगता है, आपको यह सीखना चाहिए कि हर शेयर के पीछे एक कंपनी होती है और शेयर के भाव बढ़ने का सिर्फ एक ही कारण होता है : कंपनियाँ बेहतर प्रदर्शन करती हैं या छोटी कंपनियाँ बड़ी कंपनियाँ बन जाती हैं।'

कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ने के प्रमुख कारण ये हैं :

1. ऑर्डर : जब कंपनी को कोई बड़ा ऑर्डर मिलता है, तो उस कंपनी के शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसका कारण यह है कि ऑर्डर पूरा होने पर कंपनी का लाभ बढ़ेगा। यह तार्किक है कि भावी लाभ की आशा में शेयर के भाव बढ़ जाएँ। अब हम इसके कुछ उदाहरण देखते हैं :

➤ 6 अप्रैल 2005 को रोल्टा इंडिया को 200 करोड़ रुपए का ऑर्डर मिला। इस खबर से इसके शेयर के भाव दस प्रतिशत बढ़ गए और 81 रुपए का शेयर 89.40 तक पहुँच गया।

➤ 21 अप्रैल 2005 को के.ई.सी. इंटरनेशनल कंपनी को ईथोपिया से 231 करोड़ रुपए का ऑर्डर मिला, जिस कारण इसके शेयर की कीमत लगभग 10 प्रतिशत बढ़कर 225 रुपए तक पहुँच गई।

➤ 22 अप्रैल 2005 को सीमेन्स को पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया से 147.50 करोड़ रुपए का ऑर्डर मिला, जिससे इसके शेयर के भाव 5.5 प्रतिशत बढ़कर 1940 रुपए तक पहुँच गए।

➤ 12 मई 2005 को स्कैंडेंट सॉल्युशन को अशोक लीलैंड कंपनी ने 15 लाख रुपए का ऑर्डर दिया, जिससे इसके शेयर का भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 187 रुपए तक पहुँच गया।

2. किसी दूसरी कंपनी को खरीदना या अधिग्रहण : जब कोई कंपनी किसी दूसरी कंपनी को खरीदती है या उसका अधिग्रहण (acquisition) करती है, तो दोनों ही कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ते हैं। इसके उदाहरणों पर गौर करें :

➤ 4 अप्रैल 2005 को जब यह खबर आई कि गोदरेज ग्लोबल सॉल्युशन्स ने एक अमेरिकी बी.पी.ओ. कंपनी का अधिग्रहण कर लिया है, तो गोदरेज इंडस्ट्रीज के शेयर के भाव 6 प्रतिशत बढ़कर 118.90 रुपए हो गए।

➤ 8 अप्रैल 2005 को एन.आर.सी. ने निरलॉन टायर कंपनी खरीद ली, जिससे एन.आर.सी. के शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 47.45 रुपए तक पहुँच गए।

➤ जब 19 मई 2005 को आई.सी.आई.सी.आई. बैंक ने एक रूसी बैंक आई.के.बी. का अधिग्रहण कर लिया, तो इसके शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 412 रुपए तक पहुँच गए।

3. जॉइंट वेंचर : जब दो कंपनियाँ साथ मिलकर कोई जॉइंट वेंचर या संयुक्त उपक्रम स्थापित करती हैं,

तब भी आम तौर पर दोनों ही कंपनियों के शेयरों के भाव बढ़ते हैं, क्योंकि इससे उनकी प्रगति के तेज होने की संभावना होती है। इसके उदाहरण देखें :

➤ 6 अप्रैल 2005 को एसार समूह की कंपनी एसार ग्लोबल ने कतार में चालीस लाख टन के स्टील कारखाने को स्थापित करने के लिए कतार स्टील कंपनी के साथ जॉइंट वेंचर किया। इस खबर के बाद एसार समूह के सभी शेयरों के भाव बढ़ गए। एसार स्टील के भाव 4 प्रतिशत, एसार शिपिंग के भाव 1.5 प्रतिशत और एसार ऑइल के भाव 4 प्रतिशत बढ़ गए।

➤ 3 जून 2005 को जब एच.सी.एल. टेक्नोलॉजीज ने एक जापानी कंपनी के साथ जॉइंट वेंचर किया, तो इसके शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 377 रुपए तक पहुँच गए।

➤ 13 मई 2005 को को स्टोन इंडिया ने एक इतालवी कंपनी के साथ गठबंधन कर लिया, जिस वजह से इसके शेयर के भाव 7 प्रतिशत बढ़कर 42.40 रुपए तक पहुँच गए।

4. **भावी योजनाएँ :** कंपनियाँ जब उल्लेखनीय भावी योजनाओं की घोषणा करती हैं, तो इससे भी कंपनी के शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसके उदाहरण देखें :

➤ 6 अप्रैल 2005 को मारुति के संचालक मंडल ने 3280 करोड़ रुपए की दो निवेश योजनाओं को स्वीकृति दी, जिससे मारुति के शेयर के भाव 2 प्रतिशत बढ़ गए।

➤ 26 अप्रैल 2005 को यह खबर आई कि एस.आर.एफ. बल्क-ड्रग्स बिजनेस में प्रवेश करने और अन्य कंपनियों के लिए रिसर्च करने की योजना बना रही है। इस खबर से इसका शेयर 6 प्रतिशत उछलकर 126 रुपए तक पहुँच गया।

5. **बिक्री में वृद्धि :** जब कंपनियों की बिक्री में वृद्धि होती है, तो उनका लाभ बढ़ने की संभावना होती है, इसलिए बिक्री बढ़ने की खबर से कंपनी के शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसके उदाहरणों पर एक नजर डालें :

➤ 7 अप्रैल 2005 को यह खबर आई कि टाटा मोटर्स ने पिछले साल की तुलना में मार्च 2005 में 28 प्रतिशत ज़्यादा वाहन बेचे थे। इसकी वजह से टाटा मोटर्स के शेयर का भाव दो प्रतिशत बढ़कर 422 रुपए तक पहुँच गया।

➤ जब बजाज ऑटो ने मई 2005 में पिछले साल की तुलना में दोपहिया वाहनों की बिक्री में 52 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की, तो इसके शेयर के भाव 3 प्रतिशत बढ़ गए।

6. **प्रॉडक्ट के भाव बढ़ना :** जब कंपनी अपने प्रॉडक्ट के भाव बढ़ाती है, तो उसका भावी लाभ बढ़ता है। नतीजा यह होता है कि उस कंपनी के शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसके उदाहरण देखें :

➤ 1 अप्रैल 2005 को स्टील कंपनियों ने स्टील के भाव बढ़ा दिए, जिस वजह से स्टील कंपनियों के शेयरों के भाव बढ़ गए। स्टील एथॉरिटी के शेयर के भाव 4 प्रतिशत, जिंदल विजयनगर स्टील के शेयर के भाव 8.5 प्रतिशत और जिंदल सॉ पाइप के भाव 7.5 प्रतिशत बढ़ गए।

➤ 6 अप्रैल 2005 को सोडा ऐश की कीमतें बढ़ने की आशा में ज़्यादातर केमिकल कंपनियों के शेयर उछल गए। आरती इंडस्ट्रीज के शेयर में 4.5 प्रतिशत का उछाल आया, जबकि हिंदुस्तान ऑर्गेनिक्स केमिकल लिमिटेड के शेयर में 5.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अगले दिन भी यह उछाल बना रहा और आरती इंडस्ट्रीज के शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 102 रुपए तक पहुँच गए।

➤ 7 अप्रैल 2005 को बल्लारपुर इंडस्ट्रीज ने कोटेड पेपर के भाव में 1000 रुपए प्रति टन की वृद्धि कर दी, जिसकी वजह से इसके शेयर के भाव 3 प्रतिशत बढ़कर 105 रुपए तक पहुँच गए।

7. **वित्तीय परिणामों में सुधार :** अंततः शेयर का भाव कंपनी के वित्तीय परिणामों (financial results) पर निर्भर होता है। किसी कंपनी के शेयर का भाव चाहे कितना ही कम हो, चाहे ब्रोकर्स उसे खरीदने की कितनी ही अनुशंसा कर रहे हों, लेकिन अगर उस कंपनी के वित्तीय परिणाम अच्छे न हों, तो उसके शेयर का भाव गिरना



तय है। इसी तरह किसी कंपनी के शेयर की कीमत चाहे कितनी ही ज़्यादा हो, चाहे ब्रोकर्स या विशेषज्ञ उसे खरीदने की अनुशंसा न कर रहे हों, लेकिन अगर उसके वित्तीय परिणाम अच्छे हैं, तो उसके शेयर के भाव बढ़ना तय है। जैसा पीटर लिंच कहते हैं, 'लोग गर्मागर्म शेयरों की तलाश में भटकते रहते हैं। वे यह पता लगाने में जरूरत से ज़्यादा समय लगाते हैं कि शेयर बाजार ऊपर जा रहा है या नीचे; जबकि दरअसल इस बात का कोई खास महत्व नहीं होता है। असली बात तो आमदनी है। लोगों को कंपनी की आमदनी पर नजर रखनी चाहिए।'

कंपनी के वित्तीय परिणामों की तुलना पिछले वर्ष के परिणामों से करके इसकी प्रगति का विश्लेषण किया जाता है। अगर कंपनी की बिक्री या लाभ पिछले वर्ष की तुलना में ज़्यादा है, तो आम तौर पर परिणाम अच्छे माने जाते हैं। अगर कंपनी की बिक्री या लाभ पिछले वर्ष की तुलना में कम है, तो परिणाम अच्छे नहीं माने जाते हैं। इसके उदाहरणों पर एक नजर डालें :

- कैस्ट्रॉल कंपनी का तिमाही लाभ 19 प्रतिशत बढ़ गया, जिस वजह से 19 अप्रैल 2005 को इसके शेयर का भाव 4.5 प्रतिशत बढ़कर 194 रुपए तक पहुँच गया।
- 2005 की पहली तिमाही में गुजरात गैस के लाभ में 72 प्रतिशत वृद्धि हुई। नतीजा यह हुआ कि 22 अप्रैल 2005 को इसके शेयर के भाव 13 प्रतिशत बढ़कर 925 रुपए तक पहुँच गए।
- एम.आर.पी.एल. को 2004 के वित्तीय वर्ष में 459 करोड़ रुपए का लाभ हुआ था, जबकि 2005 के वित्तीय वर्ष में इसे 850 करोड़ रुपए का लाभ हुआ। लाभ में 85 प्रतिशत की वृद्धि की इस खबर के बाद 26 अप्रैल 2005 को इसके शेयर के भाव लगभग 7 प्रतिशत बढ़कर 49.40 रुपए तक पहुँच गए।
- 2004-2005 की चौथी तिमाही में सिन्टेक्स इंडस्ट्रीज के लाभ में 100 प्रतिशत से ज़्यादा वृद्धि हुई, जिस वजह से 3 मई 2005 को इसके शेयर के भाव 16 प्रतिशत बढ़कर 573 रुपए तक पहुँच गए।

8. **डिविडेन्ड :** जब कंपनी को लाभ होता है, तो यह लाभ डिविडेन्ड के रूप में शेयरहोल्डर्स तक पहुँचता है। जब कंपनी डिविडेन्ड की घोषणा करती है, तो डिविडेन्ड पाने के लालच में लोग कंपनी के शेयर खरीदने लगते हैं, जिससे भाव बढ़ जाते हैं। ध्यान रखने वाली बात यह है कि शेयर के भाव डिविडेन्ड से ज़्यादा बढ़ते हैं, यानी अगर डिविडेन्ड दस रुपए का है, तो हो सकता है कि शेयर के भाव 20-25 रुपए बढ़ जाएँ। इसके कुछ उदाहरण देखें :

- आई. फ्लेक्स सॉल्युशन्स कंपनी ने 100 प्रतिशत डिविडेन्ड यानी 5 रुपए प्रति शेयर डिविडेन्ड की घोषणा की। इस वजह से 29 अप्रैल 2005 को इसके शेयर के भाव 8 प्रतिशत बढ़कर 638 रुपए तक पहुँच गए।
- इसी तरह सेंचुरी एंका ने 6 रुपए प्रति शेयर का डिविडेन्ड घोषित किया, जिस वजह से 4 मई 2005 को इसका शेयर 7 प्रतिशत बढ़कर 147 रुपए तक पहुँच गया।
- टाटा इन्फोटेक ने 8 रुपए प्रति शेयर डिविडेन्ड की घोषणा की, जिस वजह से 12 मई 2005 को इसके शेयर का भाव 9.5 प्रतिशत बढ़कर 545 रुपए तक पहुँच गया।

9. **पूँजी में वृद्धि :** जब कंपनी पूँजी उगाहती और बढ़ाती है, तो निवेशकों के मन में यह आशा रहती है कि ज़्यादा पूँजी का इस्तेमाल होने पर कंपनी का लाभ बढ़ेगा, क्योंकि पूँजी ही तो व्यवसाय का आधार है। ऐसा माना जाता है कि अधिक पूँजी आने के बाद कंपनी ज़्यादा तरक्की करेगी और उसे ज़्यादा लाभ होगा। जब कोई कंपनी फंड इकट्ठा करके अपनी पूँजी में वृद्धि करती है, तो इसी आशा के कारण उसके शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसके उदाहरणों पर एक नजर डालें :

- 31 मार्च 2005 को युनाइटेड वेस्टर्न बैंक के शेयर के भाव 20 प्रतिशत बढ़कर अपर सर्किट लिमिट पर पहुँच गए, क्योंकि यह खबर आई थी कि बैंक बड़े पैमाने पर पूँजी उगाहने वाली है।
- 1 अप्रैल 2005 को जी.डी.आर. इशू की योजना के कारण ऑप्टो सर्किट्स के शेयर के भाव 10 प्रतिशत बढ़कर अपर सर्किट लिमिट तक पहुँच गए।

- एडलैब फिल्मस के भाव 19 अप्रैल 2005 को 9.4 प्रतिशत बढ़ गए, क्योंकि यह प्रिफरेंशियल शेयर इशू करने वाली थी।
- अपोलो हॉस्पिटल्स 60 मिलियन डॉलर के जी.डी.आर. शेयर इशू करने की योजना बना रही थी, जिस वजह से 19 अप्रैल 2005 को इसके शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़ गए।
- रॉयल एयरवेज एफ.सी.सी.बी. जारी करके फंड इकट्ठा करने वाली है, इस खबर से 4 मई 2005 को इसके शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 54 रुपए पर पहुँच गए।

10. **बोर्ड मीटिंग :** बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग की तारीख और एजेंडा कई दिन पहले घोषित कर दिया जाता है। यदि उस मीटिंग में कोई सकारात्मक महत्वपूर्ण प्रस्ताव होता है, तो उसकी प्रत्याशा में पहले से ही शेयर की कीमत बढ़ जाती है, क्योंकि आम तौर पर यह माना जाता है कि बोर्ड उस प्रस्ताव को मंजूरी दे देगा। इसके उदाहरणों पर गौर करें।

- 27 अप्रैल 2005 को अरविंद मिल्स की बोर्ड मीटिंग में ए.डी.आर. या जी.डी.आर. के माध्यम से विदेशों से धन उगाहने के प्रस्ताव पर विचार होना था। इसके दो दिन पहले ही 25 अप्रैल 2005 को अरविंद मिल्स के शेयर के भाव 4 प्रतिशत बढ़कर 128 रुपए तक पहुँच गए।
- 20 मई 2005 को उत्तम गाल्वा स्टील्स की बोर्ड मीटिंग होने वाली थी, जिसमें जी.डी.आर., ए.डी.आर. या एफ.सी.सी.बी. के माध्यम से पूँजी उगाहने के प्रस्ताव पर विचार होना था। बोर्ड मीटिंग होने के सात दिन पहले ही 13 मई 2005 को उत्तम गाल्वा स्टील्स के शेयर का भाव 5 प्रतिशत की अपर सर्किट लिमिट पर पहुँचकर 52 रुपए हो गया।
- 17 जून 2005 को आई.टी.सी. की बोर्ड मीटिंग में स्टॉक स्प्लिट और बोनस इशू पर विचार होना था। 27 मई 2005 को यह खबर आते ही आई.टी.सी. के शेयर के भाव 4 प्रतिशत बढ़कर 1615 रुपए तक पहुँच गए।
- 22 अप्रैल 2005 को यह खबर आई कि 29 अप्रैल को बर्गर पेंट्स की बोर्ड मीटिंग होगी, जिसमें शेयर बाई-बैक यानी निवेशकों से शेयर खरीदने के बारे में विचार किया जाएगा। इस खबर के आते ही बर्गर पेंट्स के शेयर का भाव 13 प्रतिशत बढ़कर 47 रुपए तक पहुँच गया।

11. **राइट इशू :** राइट इशू में कंपनी विद्यमान शेयरहोल्डर्स को एक निश्चित अनुपात में कम कीमत पर शेयर जारी करती है। इस वजह से शेयर की कीमत बढ़ जाती है, क्योंकि इससे कई लाभ होते हैं। पहला लाभ तो यह है कि शेयरहोल्डर्स को कम कीमत पर कंपनी के शेयर मिल जाते हैं और दूसरा लाभ यह है कि इससे शेयरों की संख्या यानी लिक्विडिटी भी बढ़ जाती है, जिससे शेयरहोल्डर्स को शेयर खरीदने-बेचने में आसानी होती है। इसके उदाहरणों पर एक नजर डालें।

- बाटा कंपनी के बोर्ड ने राइट शेयर इशू करने का निर्णय लिया। राइट इशू 1:4 के अनुपात में दिया जाना प्रस्तावित था। यह राइट इशू 54 रुपए प्रति शेयर के भाव में था। यह खबर आते ही 11 अप्रैल 2005 को बाटा के शेयर का भाव लगभग 10 प्रतिशत बढ़कर 104 रुपए तक पहुँच गया।
- एग्रो डच ने 1 जून 2005 को होने वाली बोर्ड मीटिंग में राइट इशू पर विचार करने का निर्णय लिया। इस वजह से कंपनी के शेयर के भाव एक सप्ताह में 25 प्रतिशत बढ़ गए।

12. **स्टॉक स्प्लिट :** जब कंपनी स्टॉक स्प्लिट (शेयर का विभाजन) करती है, यानी दस रुपए फेस वैल्यू के शेयर को विभाजित करके 5, 2, या 1 रुपए का करती है, तो इससे उसके शेयर का भाव बढ़ जाता है। इसका कारण यह है कि इससे शेयरों की संख्या बढ़ने के कारण लिक्विडिटी बढ़ जाती है और खरीदने-बेचने में आसानी होती है। इसके अलावा, इसकी वजह से शेयर का भाव भी विभाजित होने के कारण ज़्यादा लोगों की पहुँच में आ जाता है। उदाहरण के लिए, 1600 रुपए का आई.टी.सी. का शेयर ज़्यादा लोग नहीं खरीद सकते थे, लेकिन स्टॉक स्प्लिट के कारण जब 10 रुपए फेस वैल्यू के शेयर का विभाजन 1 रुपए के दस शेयरों में किया गया, तो इसका

बाजार मूल्य 160 रुपए हो गया। अब इसे ज़्यादा लोग ख़रीद सकते हैं, क्योंकि अब यह पहले जितना महँगा नहीं लगता है। इसके उदाहरणों पर गौर करें :

- गुजरात अंबुजा कंपनी बोनस इशू और स्टॉक विभाजन पर विचार कर रही है, इस ख़बर के आते ही 13 अप्रैल 2005 को इसके शेयर के भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 440 रुपए तक पहुँच गए।
- एबन लॉयड कंपनी के बोर्ड ने दस रुपए फेस वैल्यू के शेयर को दो रुपए फेस वैल्यू के पाँच शेयरों में विभाजित कर दिया, जिस कारण 25 अप्रैल 2005 को इसके शेयर का भाव 5 प्रतिशत बढ़कर 1888 तक पहुँच गया।
- ओरिएन्ट एब्रेजिज कंपनी अपनी बोर्ड मीटिंग में स्टॉक स्प्लिट पर विचार करने वाली है, यह ख़बर आते ही 13 मई 2005 को इसके शेयर का भाव 9 प्रतिशत बढ़कर 284 रुपए तक पहुँच गया।

13. **बोनस शेयर :** जब कंपनी बोनस शेयर देने की घोषणा करती है, तो उसके शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसका कारण यह है कि इससे शेयरों की लिक्विडिटी यानी उनकी संख्या बढ़ती है, उनका बाजार मूल्य आधा हो जाता है और इस कारण वह शेयर ज़्यादा लोगों की पहुँच में आ जाता है। इसके उदाहरणों पर एक नज़र डालें :

- 22 अप्रैल 2005 को विप्रो ने 1०:1 बोनस दिया, यानी एक शेयर के बदले में एक बोनस शेयर दिया, जिस वजह से इसके शेयर की कीमत 8 प्रतिशत बढ़कर 654 रुपए तक पहुँच गई।
- 28 अप्रैल 2005 को कारबोरंडम यूनिवर्सल कंपनी ने 1०:1 के अनुपात में बोनस शेयर देने की घोषणा की, जिसके कारण इसके शेयर के भाव 9 प्रतिशत बढ़कर 143 रुपए तक पहुँच गए।
- 12 मई 2005 को हैवल्स इंडिया ने 1०:1 के अनुपात में बोनस शेयर की घोषणा की, जिस वजह से इसके शेयर का भाव 10 प्रतिशत बढ़कर 390 रुपए तक पहुँच गया।
- 25 मई 2005 को आशी इंडिया ग्लास ने 1०:1 के अनुपात में बोनस शेयर की घोषणा की, जिस वजह से इसके शेयर का भाव 11 प्रतिशत बढ़कर 212 रुपए तक पहुँच गया।

14. **आई.पी.ओ. :** जब कोई कंपनी पहली बार आई.पी.ओ. लाती है, यानी जनता को शेयर जारी करके पूँजी उगाहती है, तो स्टॉक एक्सचेंज में दर्ज होने पर आम तौर पर इसके शेयर में अच्छा लाभ होता है। इसके कुछ उदाहरण देखें :

- 31 मार्च 2005 को गेटवे डिस्ट्रीपाक्स का आई.पी.ओ. पहले दिन 90 रुपए पर खुला, जो इसके जारी करने की कीमत (issue price) से 25 प्रतिशत ज़्यादा था।
- जयप्रकाश हाइड्रो पावर का आई.पी.ओ. 32 रुपए में जारी किया गया था, लेकिन स्टॉक एक्सचेंज में यह पहले दिन ही 36.80 रुपए पर खुला।
- गोकलदास एक्सपोर्ट्स का आई.पी.ओ. 425 रुपए में जारी हुआ, जबकि 27 अप्रैल 2005 को बी.एस.ई. में सूचीबद्ध होने के पहले दिन ही यह 630 रुपए पर बंद हुआ, जिससे निवेशकों को एक ही दिन में 48 प्रतिशत लाभ हुआ।

15. **शासकीय नीतियाँ :** सकारात्मक शासकीय नीतियों से भी शेयर के भाव बढ़ते हैं। जब सरकार एक्साइज ड्यूटी, इन्कम टैक्स या सेल्स टैक्स से संबंधित महत्वपूर्ण बदलाव करती है, तो इससे कंपनियों के लाभ पर प्रभाव पड़ता है। यही वजह है कि सरकारी नीतियों से शेयर के भाव प्रभावित होते हैं। इसके उदाहरणों पर गौर करें :

- जब सरकार ने 7 अप्रैल 2005 को पी.एस.यू. बैंकों में विदेशी निवेश की सीमा 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 24 प्रतिशत करने के प्रस्ताव पर विचार करने की घोषणा की, तो इससे सार्वजनिक बैंकों के शेयर के भाव बढ़ गए। स्टेट बैंक के शेयर दो प्रतिशत, बैंक ऑफ़ बड़ौदा के शेयर तीन प्रतिशत और यूनियन बैंक के शेयर तीन प्रतिशत बढ़

गए।

➤ जब यह खबर आई कि सरकार रिटेल सेक्टर में विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाकर 49 प्रतिशत करने वाली है, तो रिटेल कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ गए। ट्रेन्ट कंपनी के शेयर 6 प्रतिशत बढ़कर 602 रुपए तक पहुँच गया, टाइटन के शेयर 4 प्रतिशत बढ़कर 277 रुपए तक पहुँच गया, और पेंटेलून रिटेल के शेयर 7 प्रतिशत बढ़कर 957 रुपए तक पहुँच गए।

➤ सरकार टेक्सटाइल निर्यात को लाभ पहुँचाने के बारे में विचार कर रही है, यह खबर आते ही 21 अप्रैल 2005 को टेक्सटाइल कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ गए। आलोक टेक्सटाइल के शेयर 3 प्रतिशत, सेंचुरी टेक्सटाइल के शेयर 9 प्रतिशत और अरविंद मिल्स के शेयर 2 प्रतिशत बढ़ गए।

➤ जब सरकार ने 21 अप्रैल 2005 को यह घोषणा की कि यह निर्माणकारी योजनाओं में वृद्धि करेगी, तो निर्माण कार्य करने वाली कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ गए। हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन्स के शेयर 5 प्रतिशत बढ़कर 607 रुपए पर पहुँच गए, नागार्जुन कंस्ट्रक्शन्स के शेयर 5 प्रतिशत बढ़कर 759 रुपए तक पहुँच गए और आई.वी.आर.सी.एल. इन्फ्रास्ट्रक्चर के शेयर 3 प्रतिशत बढ़कर 437 रुपए तक पहुँच गए।

16. अंतर्राष्ट्रीय कारण : शेयरों के भाव अंतर्राष्ट्रीय कारणों से भी बढ़ते हैं, क्योंकि उनसे आयात-निर्यात पर प्रभाव पड़ता है। इसके उदाहरण देखें :

➤ यूरोपीय संघ चीन के वस्त्र निर्यात को कम करने पर विचार कर रहा है, इस खबर से भारतीय वस्त्र-निर्माता कंपनियों के शेयरों के भाव बढ़ गए, क्योंकि इस कदम से भारतीय कंपनियों का निर्यात बढ़ने की आशा थी। इस खबर से 7 अप्रैल 2005 को अरविंद मिल्स का शेयर 3 प्रतिशत बढ़कर 123 रुपए तक पहुँच गया, नाहर एक्सपोर्ट्स का शेयर 5 प्रतिशत बढ़कर 72 रुपए तक पहुँच गया और मालवा कॉटन का शेयर 10 प्रतिशत बढ़कर 78 रुपए तक पहुँच गया।

➤ 21 अप्रैल 2005 को लंदन मेटल एक्सचेंज में धातु की कीमतें बढ़ गईं। इस वजह से भारत में मेटल सेक्टर की कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ गए। जिंदल स्टेनलेस स्टील के शेयर 3 प्रतिशत बढ़कर 1049 रुपए तक पहुँच गए, टाटा स्टील के शेयर 1 प्रतिशत बढ़कर 367 रुपए तक पहुँच गए और भूषण स्टील के शेयर 2.5 प्रतिशत बढ़कर 222 रुपए तक पहुँच गए।

➤ 12 मई 2005 को जब यह खबर आई कि चीन की मुद्रा युआन का मूल्य बढ़ने वाला है, तो भारतीय स्टील कंपनियों के शेयर के भाव बढ़ गए, क्योंकि इससे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय स्टील की कीमत चीनी स्टील की तुलना में कम हो जाएगी, जिससे भारतीय कंपनियों का निर्यात बढ़ेगा और उन्हें लाभ होगा। इस खबर से उत्तम स्टील के शेयर के भाव 3 प्रतिशत, जिंदल स्टेनलेस स्टील के शेयर के भाव 1.5 प्रतिशत और टाटा स्टील के शेयर के भाव 1.2 प्रतिशत बढ़ गए।

17. कंपनी द्वारा बाई-बैक या शेयर की खरीद : जब कंपनी निवेशकों से शेयर खरीदने की घोषणा करती है, तो आम तौर पर यह बाजार मूल्य से अधिक पर शेयर खरीदती है। यही ओपन ऑफर में भी होता है, जब कोई कंपनी किसी कंपनी को खरीदने के बाद निवेशकों से निश्चित संख्या में शेयर खरीदती है। इस वजह से शेयर के भाव बढ़ जाते हैं। इसके उदाहरणों पर गौर करें।

➤ अरेवा कंपनी ने यह घोषणा की कि यह एलस्टम कंपनी के 20 प्रतिशत शेयर 75 रुपए के भाव पर खरीदेगी। इस वजह से एलस्टम कंपनी के शेयर के भाव लगातार दो दिन तक बीस प्रतिशत बढ़े और 8 अप्रैल 2005 को 109 रुपए तक पहुँच गए।

➤ 11 अप्रैल 2005 को क्राइसिल कंपनी के शेयर के भाव 9 प्रतिशत बढ़कर 765 रुपए तक पहुँच गए, जब इसे खरीदने वाली अमेरिकी कंपनी एस. एंड पी. ने अपनी ओपन ऑफर बढ़ाकर 775 रुपए प्रति शेयर कर दी।

➤ जब यह खबर आई कि फ्लेक्स्ट्रॉनिक्स सॉफ्टवेयर कंपनी के शेयर का बाई-बैक होने वाला है, तो 4 मई 2005 को इसके शेयर की कीमत 10 प्रतिशत बढ़कर 629 रुपए तक पहुँच गई।

18. **कंपनी के लिए अनुकूल समय आना :** कई उद्योगों में मौसम या समय का बहुत महत्व होता है। अनुकूल समय में कंपनियों के शेयर के भाव ज़्यादा रहते हैं और प्रतिकूल समय में भाव कम रहते हैं। इसके उदाहरण देखें :

- सीमेंट की बिक्री बारिश के मौसम में कम हो जाती है, इस वजह से उस समय सीमेंट कंपनियों के शेयरों के भाव भी अपेक्षाकृत कम होते हैं। लेकिन बारिश का मौसम खत्म होते ही सीमेंट की बिक्री बढ़ जाती है, इसलिए सीमेंट कंपनियों के शेयरों के भाव भी बढ़ जाते हैं।
- मानसून अच्छा होने पर फर्टिलाइजर कंपनियों की बिक्री अच्छी होती है, लेकिन मानसून अच्छा न होने पर फर्टिलाइजर कंपनियों की बिक्री अच्छी नहीं होती है।
- स्कूल यूनिफॉर्म बनाने वाली कंपनियों की बिक्री मई से जुलाई तक बहुत अच्छी होती है।

19. **रुपए और डॉलर की मजबूती :** रुपया मजबूत हो रहा है या डॉलर, इससे भी कई कंपनियों के शेयर के भाव पर फर्क पड़ता है, खास तौर पर उन कंपनियों के भाव पर, जिनके व्यापार में आयात-निर्यात की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जब रुपए का मूल्य डॉलर की तुलना में घटता है, तो यह निर्यातक कंपनियों के लिए अच्छा होता है, क्योंकि उनकी आमदनी डॉलर में होती है और इसलिए रुपए में उनकी आमदनी ज़्यादा हो जाती है। दूसरी तरफ, जब रुपए का मूल्य डॉलर की तुलना में मजबूत होता है, तो यह आयात करने वाली कंपनियों के लिए अच्छा होता है, क्योंकि उन्हें आयातित सामान के बदले में कम रुपए देने पड़ते हैं।

20. **ब्रोकरों और पत्रिकाओं की सलाह या टिप्स :** जब ब्रोकर या पत्रिकाएँ किसी कंपनी को खरीदने की सलाह देती हैं, तो उस कंपनी के शेयर का भाव कुछ समय के लिए बढ़ जाता है। जैसे दलाल स्ट्रीट या आई.सी.आई.सी.आई. डायरेक्ट या फाइव पैसा डॉट कॉम में जिस कंपनी के शेयर को खरीदने की सलाह दी जाती है, उसके भाव तत्काल बढ़ जाते हैं। जब 12 सितंबर 2005 के एकोनॉमिक टाइम्स में वी.बी.सी. फेरो एलॉइज के बारे में यह सलाह छपी कि एक साल में इसके शेयर के भाव बढ़कर 545 रुपए हो जाएँगे, उस समय इसके शेयर का भाव 194 रुपए था। इस खबर के बाद दो दिन तक लगातार वी.बी.सी. फेरो एलॉइज में अपर सर्किट लगता रहा और एक सप्ताह में ही इसका भाव 50 प्रतिशत बढ़कर 284 रुपए तक पहुँच गया।

## 6. मशहूर निवेशक वॉरेन बफेट की सफलता के 10 सूत्र

वॉरेन बफेट दुनिया के दूसरे सबसे अमीर आदमी हैं। उनके पास 44 बिलियन डॉलर की संपत्ति है, जो उन्होंने शेयर बाजार से कमाई है। वे निवेश करके ही इतने अमीर बने हैं। आखिर उनकी सफलता का राज क्या है? अगर हम उनकी सफलता का राज जान लें, तो हमारी सफलता की संभावना भी बढ़ जाएगी। जैसा जिम रॉन कहते हैं, 'इस बात पर ध्यान दें कि सफल लोग क्या करते हैं। ऐसा करना इसलिए जरूरी है, क्योंकि सफलता अपने सुराग छोड़ जाती है।'

वॉरेन बफेट ने ग्यारह साल की उम्र में अपनी बहन को सिटीज सर्विस प्रिफर्ड नामक कंपनी के तीन शेयर 38 डॉलर की कीमत पर खरीदवा दिए। दुर्भाग्य से शेयर का भाव 27 डॉलर तक गिर गया। उनकी बड़ी बहन उन्हें हर दिन ताना मारती रहती थी। अंततः उस कंपनी के शेयर के भाव बढ़ने लगे। जब शेयर के भाव 40 डॉलर हो गए, तो बहन के तानों से तंग आकर बफेट ने अपनी बहन के शेयर बिकवा दिए। ब्रोकरेज निकालने के बाद बहन को 5 डॉलर यानी 4 प्रतिशत का फायदा हुआ। लेकिन उसके बाद जो हुआ, उसे वॉरेन बफेट कभी नहीं भूल पाए। उसके बाद सिटीज सर्विस प्रिफर्ड कंपनी का शेयर 200 डॉलर तक ऊपर चढ़ा। इससे वॉरेन बफेट ने यह सबक सीखा कि दीर्घकालीन नीति ही सर्वश्रेष्ठ नीति है और अल्पकालीन उतार-चढ़ाव से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

इसी तरह जब वॉरेन बफेट ने 1971 में वॉशिंगटन पोस्ट के शेयर खरीदे, तो पाँच साल तक शेयर के भाव उनकी खरीदी के भाव से कम ही बने रहे। लेकिन बफेट ने धैर्य से काम लिया। 14 साल बाद 1985 में वॉशिंगटन पोस्ट के शेयर के भाव उनकी खरीदी के भाव से बीस गुना बढ़ चुके थे। अगर कंपनी अच्छी है, तो धैर्य रखना सर्वश्रेष्ठ नीति है।

वॉरेन बफेट जानते हैं कि बाजार में भावनाओं का जोर रहता है और अल्पकालीन दृष्टि से शेयर बाजार भावनाओं के कारण ही उठता या गिरता है। लेकिन वे यह भी जानते हैं कि अंततः अर्थशास्त्र, गणित या तर्क की ही विजय होती है। जब बाजार गिरने के कारण उनके शेयरों की कीमत आधी हो जाती है, तब भी वे घबराते नहीं हैं। ऐसी स्थिति में वे एवरेजिंग कर लेते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कंपनी अच्छी है और उसके शेयर के भाव आज नहीं, तो कल जरूर बढ़ेंगे।

बफेट कहते हैं, 'निवेश दुनिया का सबसे अच्छा बिजनेस है, क्योंकि आपको कभी बॉल पर बल्ला घुमाने की जरूरत नहीं है। आप स्टैंप्स के सामने खड़े रहते हैं और आपके सामने गेंद आती है कि जनरल मोटर्स 47 डॉलर में आ रही है! यू.एस.स्टील 39 डॉलर में आ रही है! अगर आप बल्ला नहीं घुमाते हैं, तब भी इस खेल में आप आउट नहीं होते हैं। अवसर गँवाने के सिवाय आपको कोई दूसरा नुकसान नहीं होता है। पूरे दिन आप अपनी मनचाही गेंद का इंतजार करते हैं और जब सारे फील्डर सो जाते हैं, तब आप कदम बाहर निकालते हैं और बल्ला घुमा देते हैं।'

वॉरेन बफेट के कैरियर पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालने से आपको उनकी नीति आसानी से समझ में आ जाएगी।

➤ जब 1964 में सलाद ऑइल स्कैंडल के कारण अमेरिकन एक्सप्रेस के शेयर 62 डॉलर से गिरकर 35 डॉलर पर आ गए, तो बफेट ने उसके शेयर खरीद लिए, क्योंकि उनका विश्वास था कि इस स्कैंडल से अमेरिकन एक्सप्रेस की प्रगति प्रभावित नहीं होगी। पाँच साल बाद अमेरिकन एक्सप्रेस के शेयर का भाव 189 डॉलर तक पहुँच गया और बफेट को प्रति शेयर 154 डॉलर का लाभ हुआ।

➤ 1973 में वॉरेन बफेट ने एफिलिएटेड पब्लिकेशन्स कंपनी के 15 लाख शेयर 2.26 डॉलर (स्टॉक स्प्लिट और बोनस शेयर की गणना के बाद) के भाव पर खरीदे। 15 अप्रैल 1986 को उन्होंने अपने शेयर 48.24 प्रति डॉलर के भाव पर बेचे और कई गुना लाभ कमाया।

➤ 1973 में ही बफेट ने इंटरपब्लिक ग्रुप कंपनी के शेयर खरीदना शुरू किए और 1982 तक 14 लाख 22 हजार शेयर 3.19 डॉलर के औसत भाव पर खरीद लिए। मई 1983 से फरवरी 1985 तक बफेट ने अपने आधे शेयर 33.62 के औसत भाव पर बेच दिए।

➤ 1973 में बफेट ने ओगिल्वी एंड मैदर कंपनी के शेयर खरीदना शुरू किए और 1982 के अंत तक उन्होंने लगभग 8 लाख शेयर 4.74 डॉलर प्रति शेयर की औसत कीमत पर खरीद लिए। मई-जून 1983 में बफेट ने 29 डॉलर के भाव पर इस कंपनी के कुछ शेयर बेच दिए। बाद में बफेट ने इस कंपनी के लगभग डेढ़ लाख शेयर 33.20 डॉलर के भाव पर बेचे और इसके बाद भी आधे शेयर बचाकर रख लिए।

हर निवेशक को वॉरेन बफेट की सफलता से सबक सीखना चाहिए, क्योंकि सफल निवेशक से व्यावहारिक गुर सीखकर ही निवेश की कला सीखी जा सकती है। उनकी सफलता के दस सूत्र ये हैं :

1. जिस कंपनी के बारे में जानते नहीं हों, उसके शेयर न खरीदें। अपनी योग्यता के दायरे के भीतर ही रहें। जिन कंपनियों और उद्योगों के बारे में आपको अच्छा ज्ञान हो, उन्हीं में निवेश करें। फ्रांसिस बेकन की इस बात को हमेशा याद रखें, 'ज्ञान ही शक्ति है।' चूंकि आपको उस क्षेत्र का ज्ञान है, इसलिए आपका निवेश सुरक्षित रहेगा। कंपनी का अच्छा अध्ययन कर लें। बुक वैल्यू, पी.ई. रेशो, कैशफ्लो इत्यादि के रिकॉर्ड का अध्ययन कर लें और आधारभूत विश्लेषण (fundamental analysis) के बाद ही किसी कंपनी के शेयर खरीदें। जब आप इतना सब कर लेते हैं, तो जोखिम का सवाल ही नहीं उठता है। जैसा वॉरेन बफेट कहते हैं, 'जोखिम तब होता है, जब आप यह नहीं जानते हों कि आप क्या कर रहे हैं।'

2. ब्रोकर्स, विश्लेषकों या विशेषज्ञों की बातें सुनें तो सही, लेकिन उन पर ज्यादा ध्यान न दें। खुद के निर्णय लें। जिन कंपनियों की प्रगति पर आपको भरोसा हो, उन्हीं में निवेश करें। भीड़ के पीछे-पीछे न चलें। सब जो काम कर रहे हैं, वह करने से आपको अल्पकाल में तो कुछ लाभ हो सकता है, लेकिन आप दीर्घकालीन दृष्टि से सफल नहीं हो सकते, क्योंकि शेयर बाजार में ज्यादातर लोग अल्पकालीन निर्णय ही लेते हैं। बेहतर तो यह है कि दूसरों के विपरीत चलें। जब शेयर बाजार आसमान छू रहा हो, तो खरीदने से बचें और जब शेयर बाजार लुढ़क रहा हो, तो दहशत में आकर बिकवाली न करें। जब दूसरे बेचें, तो खरीदें और जब दूसरे खरीदें, तो बेचें। जैसा वॉरेन बफेट कहते हैं, 'जनमत की राय मौलिक विचार का विकल्प नहीं होती।'

3. बाजार पर अति प्रतिक्रिया न करें। वॉरेन बफेट का मानना है कि शेयर बाजार में सफल होने के लिए सिर्फ सामान्य बुद्धि की जरूरत होती है। बहरहाल, आपमें इतना आत्मविश्वास होना चाहिए कि आप तूफानों से न घबराएँ, क्योंकि शेयर बाजार में अक्सर तूफान आते रहते हैं। लुइसा मे एल्कांट की तरह बनें, जिन्होंने कहा था, 'मैं तूफानों से नहीं घबराती हूँ, क्योंकि मैं अपनी कशती खेना सीख रही हूँ।'

शेयर बाजार गिर रहा है या उठ रहा है, इस बात की ज्यादा चिंता न करें। इसके बजाय अपनी कंपनी को प्रभावित करने वाली बातों पर ध्यान दें। शेयर बाजार के उठने या गिरने की भविष्यवाणियों पर ज्यादा ध्यान न दें। इसके बजाय कंपनी का विश्लेषण करें। शेयर का भाव चाहे किसी भी दिशा में जाए, कंपनी की मूलभूत दिशा सही होना चाहिए। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि थोड़े समय के लिए शेयर का भाव किस दिशा में जा रहा है। अच्छी कंपनियाँ चुनें, उनके शेयर सस्ते में खरीदें और फिर इंतजार करें। जैसा वॉरेन बफेट कहते हैं, 'मार्केट के उतार-चढ़ाव को अपने दुश्मन की तरह नहीं, बल्कि दोस्त की तरह देखें। मूर्खता की दौड़ में शामिल होने के बजाय उससे फायदा उठाएँ।'

4. धैर्य रखें। 10 मिनट के बारे में नहीं, बल्कि 10 साल के बारे में सोचें। एक बार किसी ने बफेट से पूछा, 'आप अपने शेयर बेचने के लिए कितने लंबे समय तक इंतजार करेंगे?' उन्होंने जवाब दिया, 'अगर कंपनी सही है, तो हम अनंत काल तक इंतजार करेंगे।'

शेयर बाजार गिरता भी है; शेयर बाजार उठता भी है। यह बात जान लें कि हर कंपनी के शेयर का भाव बढ़ता है

और हर कंपनी के शेयर का भाव घटता है। यह तो सिर्फ समय की बात है। अच्छा निवेशक किसी कंपनी के शेयर खरीदने से पहले उसके भाव गिरने का इंतजार करता है और शेयर खरीदने के बाद उसके भाव बढ़ने का इंतजार करता है। शेयर बाजार में धैर्य ही सफलता की कुंजी है। यह न भूलें कि शेयर बाजार चार दिन की चाँदनी नहीं है, यह तो एक दीर्घकालीन निवेश है। जैसा वॉरेन बफेट कहते हैं, 'समय अच्छी कंपनी का मित्र और बुरी कंपनी का शत्रु होता है।'

5. शेयर नहीं, कंपनी खरीदें। सही कंपनी चुनने के बाद आप उसके शेयर के भाव के बारे में चिंता न करें। स्टॉक मार्केट गिरता है या उठता है, उसकी चिंता छोड़ दें। शेयर चुनने की कुंजी है कंपनी की प्रगति। आप जिस कंपनी के शेयर खरीदना चाहते हों, उसके पिछले कई साल के रिकॉर्ड की जाँच करें। ऐसी कंपनी चुनें, जिसके बारे में आपको पर्याप्त ज्ञान हो, जिसकी दीर्घकालीन सफलता की अच्छी संभावना हो, जिसके मालिक तथा संचालक ईमानदार व योग्य लोग हों और जिसके शेयर की कीमत आकर्षक हो। कभी भी अल्पकालीन दृष्टि से शेयर के भाव के बारे में न सोचें, हमेशा दीर्घकालीन दृष्टि से कंपनी की प्रगति के बारे में सोचें। जैसा वॉरेन बफेट कहते हैं, 'अगर कंपनी अच्छी प्रगति करती है, तो उसके शेयर के भाव भी निश्चित रूप से बढ़ेंगे।'

6. फटाफट अमीर बनने की न सोचें। फटाफट अमीर बनने के लालच में अनजानी कंपनियों के चक्कर में न पड़ें। गुमनाम कंपनियों के पास सफलता का रिकॉर्ड नहीं होता है, इसलिए उनके बारे में कोई सटीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। सुनहरे सपनों के मायाजाल से सावधान रहें, क्योंकि शेयर बाजार में सुनहरे सपने दिखाकर जेब ढीली करवाने के कई हादसे हो चुके हैं। फटाफट अमीर बनने के दिवास्वप्न देखने के बजाय वास्तविकता के धरातल पर विचार करें और सिर्फ ऐसी कंपनियाँ चुनें, जिनका पुराना रिकॉर्ड अच्छा हो और जिनकी भावी प्रगति निश्चित दिख रही हो।

वॉरेन बफेट के अनुसार शेयर बाजार में सफलता का सूत्र जल्दबाजी नहीं, बल्कि आलस है। न तो खरीदने की जल्दबाजी करें, न ही बेचने की। एक दिन में दस सौदे करने से अच्छा है कि दस महीने में एक सौदा किया जाए। दूर तक सोचें। जैसा वॉरेन बफेट कहते हैं, 'मैं कभी शेयर बाजार में पैसे कमाने की कोशिश नहीं करता हूँ। मैं यह मानकर शेयर खरीदता हूँ कि शेयर बाजार अगले दिन बंद हो जाएगा और फिर पाँच साल तक दोबारा नहीं खुलेगा।'

7. अपने निवेशों को केंद्रित करें। दर्जनों कंपनियों में पैसा न लगाएँ। चुनिंदा कंपनियों में निवेश करें। बफेट के अनुसार डाइवर्सिफिकेशन (बहुत सी कंपनियों में पैसा लगाने) के बजाय कॉन्सेंट्रेशन (कम कंपनियों में पैसा लगाना) ज्यादा अच्छी नीति है। अगर आप सिर्फ कुछ कंपनियों में ही अपना पैसा लगाएँगे, तो आप भावना में बहकर हर कहीं निवेश नहीं करेंगे। वॉरेन बफेट कहते हैं, 'बहुत ज्यादा डाइवर्सिफिकेशन की जरूरत तभी पड़ती है, जब निवेशक को यह पता नहीं हो कि वह क्या कर रहा है।'

8. बाजार गिरने को खरीदारी के अवसर के रूप में देखें। शेयर बाजार के गिरने या अपनी कंपनी के शेयर के भाव कम होने के कारण दहशत में न आएँ। इसे खरीदारी का अवसर मानें। अपनी मानसिकता को बदल लें। गिरते बाजार को पसंद करना सीखें, क्योंकि गिरते बाजार में ही खरीदारी के अच्छे अवसर मिलते हैं। जब भी आपको अपनी मनपसंद कंपनी के शेयर सस्ते दिखें, तो खरीद लें। जैसा जीन पॉल गेटी कहते हैं, 'मैं तब खरीदता हूँ, जब दूसरे लोग बेचने के लिए उतावले होते हैं।'

9. हर गेंद पर बल्ला न घुमाएँ। अगर आपसे शेयर बाजार की हर कंपनी के बारे में भविष्यवाणी करने को कहा जाए, तो यह काम मुश्किल होगा और इस मामले में आपकी सफलता की बहुत कम संभावना होगी। लेकिन अगर आपको सिर्फ एक-दो कंपनियों के बारे में भविष्यवाणी करने को कहा जाए, तो आपकी सफलता की संभावना बहुत ज्यादा होगी। सच तो यह है कि शेयर बाजार में सफल होने के लिए आपको सिर्फ मुट्ठी भर



कंपनियों की ही जरूरत होती है। जैसा वॉरेन बफेट ने कहा है, 'सही अवसर आने पर ही काम करें। मेरी जिंदगी में ऐसे दौर रहे हैं, जब मेरे मन में खरीदारी के बहुत से अच्छे विचार थे और मेरे जीवन में ऐसे भी दौर रहे हैं, जब मेरे पास खरीदारी का कोई अच्छा विचार नहीं था। अगर अगले सप्ताह मेरे मन में कोई विचार आएगा, तो मैं कुछ करूँगा; अगर नहीं आएगा, तो मैं कुछ भी नहीं करूँगा।'

10. मैनेजमेंट पर पूरा ध्यान दें। वॉरेन बफेट के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कंपनी का कर्ता-धर्ता कौन है और कैसा है। किसी कंपनी में निवेश करने से पहले उसके मैनेजमेंट को अच्छी तरह से देख लें। जिस कंपनी का मैनेजमेंट विश्वसनीय न हो या जो ऑकड़ों के हेर-फेर में माहिर हो, उस कंपनी में निवेश न करें, क्योंकि ऐसी कंपनियों में निवेश करने से आपका मूल धन भी खतरे में पड़ जाएगा। और वॉरेन बफेट कहते हैं, 'शेयर बाजार के सिर्फ दो नियम होते हैं : पहला यह कि अपने मूल धन को सुरक्षित रखें और दूसरा यह कि पहले नियम को कभी न भूलें।'

# परिशिष्ट 1

## सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियाँ

(5 जनवरी 2006 के आँकड़े)

सेंसेक्स : 9617.74

पी.ई. रेशो : 18.98

क्रमांक	कंपनी	भाव	पी.ई. रेशो
1.	इन्फोसिस	3055.10	38.6
2.	रिलायंस इंडस्ट्रीज	921.65	14
3.	आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	604.05	23.6
4.	आई.टी.सी.	145.40	23
5.	एच.डी.एफ.सी.	1240.15	27.4
6.	ओ.एन.जी.सी.	1181.05	11.4
7.	भारती टेली	342.05	29.4
8.	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	941.30	10.8
9.	एल.एंड टी.	1845.25	32.8
10.	सत्यम कम्प्यूटर्स	751.95	28.8
11.	हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड	194.90	36
12.	एच.डी.एफ.सी. बैंक	739.05	30.5
13.	टी.सी.एस.	1725.90	36.5
14.	टाटा मोटर्स	646.95	18.5
15.	टाटा स्टील	380.45	5.6
16.	बजाज ऑटो	2071	23.7
17.	एन.टी.पी.सी.	114	15.3
18.	विप्रो	474.25	40.7
19.	हिंडाल्को	149.45	12.4
20.	बी.एच.ई.एल.	1456.40	30.7
21.	ग्रासिम इंडस्ट्रीज	1477.95	15.3
22.	गुजरात अंबुजा सीमेंट	87.70	26.3
23.	रेनबैक्सी लेबोरेटरीज	365.35	72.8
24.	हीरो होंडा	869	20
25.	सिपला		

		444.25	28.4
26.	ए.सी.सी.	555.55	18.3
27.	रिलायंस एनर्जी	613.35	20.7
28.	टाटा पॉवर	447.25	16
29.	डॉ. रेड्डीज लेब	1028.45	47.3
30.	मारुति उद्योग	672.30	19.7

## परिशिष्ट 2

### निफ्टी में शामिल 50 कंपनियाँ

(5 जनवरी 2006 के आँकड़े)

निफ्टी : 2899.85

पी.ई. रेशो : 17.55

क्रमांक	कंपनी	भाव	पी.ई. रेशो
1.	ओ.एन.जी.सी.	1180.05	11.4
2.	रिलायंस इंडस्ट्रीज	921.70	14
3.	इन्फोसिस	3054.90	38.6
4.	टी.सी.एस.	1732.35	36.6
5.	विप्रो	474.05	40.7
6.	भारती टेली	342.45	29.4
7.	आई.टी.सी.	145.40	23
8.	आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	604.55	23.6
9.	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	941.30	10.8
10.	हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड	194.80	36
11.	बी.एच.ई.एल.	1456.05	30.7
12.	एच.डी.एफ.सी.	1240.75	27.4
13.	एल. एंड टी.	1849.50	32.9
14.	टाटा मोटर्स	647.05	18.5
15.	सत्यम कम्प्यूटर्स	752.05	28.8
16.	गेल	280.45	9.8
17.	एच.डी.एफ.सी. बैंक	739.50	30.5
18.	सेल	53.40	3.4
19.	टाटा स्टील	380.40	5.6
20.	बजाज ऑटो	2069.40	23.7
21.	मारुति उद्योग	670.80	19.6
22.	एच.सी.एल. टेक्नोलॉजी	562.75	55.2
23.	हिंडाल्को	149.60	12.4
24.	हीरो होंडा	867.95	20
25.	पंजाब नेशनल बैंक		

		494.25	10.7
26.	नेशनल एल्युमिनियम	238.90	11.8
27.	बी.पी.सी.एल.	460.80	-100.6
28.	रेनबैक्सी लेबोरेटरीज	365.95	72.9
29.	ग्रासिम इंडस्ट्रीज	1478.20	15.3
30.	सिपला	443.75	28.4
31.	सन फार्मा	675.70	31.8
32.	रिलायंस एनर्जी	613.60	20.7
33.	महिंद्रा एंड महिंद्रा	515.85	20.4
34.	गुजरात अंबुजा सीमेंट	87.65	26.2
35.	एच.पी.सी.एल.	339.90	56.1
36.	वी.एस.एन.एल.	398.50	15
37.	ग्लैक्सो स्मिथ फार्मा	1231.90	21.6
38.	ए.सी.सी.	556.15	18.3
39.	जेट एयरवेज	1144.20	23.2
40.	एम.टी.एन.एल.	142.20	10.8
41.	टाटा पॉवर	447.50	16
42.	ए.बी.बी.	2012.15	43.8
43.	डॉ. रेड्डीज लेबोरेटरीज	1029.30	47.3
44.	ओरिएंटल बैंक	276.20	12.8
45.	जी टेलीफिल्म	161.50	51.1
46.	आई.पी.सी.एल.	243.15	5.8
47.	डाबर	206	35.7
48.	टाटा टी	951.05	33.7
49.	टाटा केमिकल	247.05	13.3
50.	शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया	165.65	3.6

## परिशिष्ट 3

### शेयर बाजार की चुनिंदा शब्दावली

ए.जी.एम.	शेयर होल्डर्स की वार्षिक बैठक, जिसमें कंपनी के रिकॉर्ड की जाँच होती है, डायरेक्टर चुने जाते हैं और कंपनी चलाने के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं।
मंदड़िया	वह व्यक्ति, जो शेयर की कीमतें गिरने की आशा करता है और शेयर बेचकर उन्हें बाद में कम कीमत पर खरीदकर लाभ कमाने की कोशिश करता है
तेजड़िया	वह व्यक्ति, जो शेयर की कीमतें बढ़ने की आशा करता है और शेयर खरीदकर उन्हें बाद में ज़्यादा कीमत पर बेचकर लाभ कमाने की कोशिश करता है
ब्लू चिप शेयर	ऐसी कंपनियों के शेयर, जो अच्छे और बुरे दोनों समयों में लाभ कमाने और डिविडेन्ड देने के लिए जानी जाती हैं। इनके शेयर खरीदने में सुरक्षा ज़्यादा होती है, लेकिन तुलनात्मक रूप से कम लाभ होता है।
बोनस इशू	विद्यमान शेयरहोल्डर्स को बोनस या मुफ्त में दिए जाने वाले शेयर, जो आम तौर पर पूर्व-निर्धारित अनुपात में दिए जाते हैं, जैसे तीन विद्यमान शेयर्स के बदले में एक बोनस शेयर।
ब्रोकरेज	ब्रोकर द्वारा लिया जाने वाला शुल्क, जो वह शेयर खरीदने या बेचने की सेवा के बदले में लेता है।
डाइवर्सिफिकेशन	अलग-अलग सेक्टरों की कंपनियों में निवेश करना, ताकि जोखिम कम रहे।
डिविडेन्ड	कंपनी के लाभ में से शेयरहोल्डर्स को हिस्सा देना।
ई.पी.एस.	प्रति शेयर आमदनी। कंपनी के शुद्ध लाभ को कंपनी के कुल शेयर्स से विभाजित करने पर ई.पी.एस. निकाला जाता है। जैसे सौ रुपए का लाभ हो और बीस शेयर हों, तो ई.पी.एस. पाँच रुपए होगा।
इंटरिम डिविडेन्ड	साल के बीच में दिया जाने वाला डिविडेन्ड।
प्रिफरेंस शेयर	ये शेयर विशेष रूप से जारी किए जाते हैं और आम तौर पर इनकी डिविडेन्ड की दर पूर्व-निर्धारित होती है।
पी.ई.रेशो	शेयर के भाव में ई.पी.एस. का भाग देने पर पी.ई.रेशो निकलता है। शेयर खरीदते समय इस पर विचार करना बहुत महत्वपूर्ण होता है।
राइट इशू	विद्यमान शेयरहोल्डर्स को उसी कंपनी के शेयर बाजार मूल्य से कम कीमत पर खरीदने का अधिकार। आम तौर पर यह पूर्व-निर्धारित अनुपात में होता है, उदाहरण के लिए, चार शेयर के बदले में एक राइट शेयर।
स्टॉक ब्रोकर	स्टॉक एक्सचेंज का वह सदस्य, जो क्लायंट्स के लिए शेयर खरीदता और बेचता है।
सर्किट लिमिट	किसी दिन शेयर के भाव की अधिकतम और न्यूनतम सीमा। कोई भी शेयर सर्किट लिमिट से ज़्यादा नहीं बढ़ सकता या उससे ज़्यादा नहीं गिर सकता। अलग-अलग शेयरों की सर्किट लिमिट अलग-अलग होती है। सर्किट लिमिट

	टी ग्रुप के शेयरों में 5 प्रतिशत, कुछ शेयरों में दस प्रतिशत और कुछ में बीस प्रतिशत होती है।
डिलिवरी	शेयर खरीद कर उनका स्वामित्व लेना।
डीमैट	डीमैट या डीमटेरियेलाइजेशन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा निवेशक इलेक्ट्रॉनिक रूप में शेयरों का स्वामी बनता है, जो उसके डीमैट अकाउंट में जमा होते हैं।
फेस वैल्यू	वह मूल्य जो शेयर पर अंकित होता है, आम तौर पर ज्यादातर शेयर्स की फेस वैल्यू 10 रुपए होती है, लेकिन स्टॉक स्प्लिट होने के कारण फेस वैल्यू कम होती रहती है।
इन्डेक्स	शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव का सूचक।
आई.पी.ओ.	कंपनी द्वारा जारी किए जाने वाले सार्वजनिक शेयर। आम तौर पर इन्हें खरीदने में मुनाफा ज्यादा होता है।
मीच्युअल फंड	निवेश कंपनियों और बैंकों द्वारा चलाए जाने वाले फंड, जो शेयरहोल्डर्स के धन का बड़े पैमाने पर निवेश करते हैं।
रिकॉर्ड डेट	डिविडेंड, बोनस शेयर या राइट इशू करने के लिए कंपनी द्वारा निर्धारित तिथि, जिस दिन शेयरहोल्डर के पास उस शेयर का स्वामित्व होना चाहिए।
स्प्लिट	शेयरों का विभाजन। उदाहरण के लिए, 10 रुपए फेस वैल्यू के शेयर को 2 रुपए के पाँच शेयरों में विभाजित किया जाता है।
तकनीकी विश्लेषण	किसी शेयर की कीमतों का ऐतिहासिक विश्लेषण, जिसके आधार पर भविष्य की अल्पकालीन प्रवृत्ति बताई जाती है।
आधारभूत विश्लेषण	किसी कंपनी की बैलेंस शीट, रिजल्ट्स और उसके उत्पादों का ऐतिहासिक अध्ययन, जिसके आधार पर भविष्य की प्रवृत्ति निर्धारित की जाती है।
बोर्ड मीटिंग	किसी विशेष निर्णय लेने के लिए बुलाई गई बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की बैठक।
एक्विजिशन	अधिग्रहण। एक कंपनी द्वारा दूसरी कंपनी को खरीद लेना या उस पर नियंत्रणकारी स्वामित्व पा लेना।
विलय	एक कंपनी का दूसरी कंपनी में शामिल हो जाना।
ए.डी.आर.	अमेरिकन डिपॉजिटरी रिसीट्स
जी.डी.आर.	ग्लोबल डिपॉजिटरी रिसीट्स
एफ.सी.सी.बी.	फॉरेन करेन्सी कनवर्टिबल बॉन्ड्स
एवरेजिंग	कंपनी के शेयर के भाव गिर जाने पर उस कंपनी के शेयर दोबारा खरीद लेना, ताकि औसत खरीदी लागत कम हो जाए।

## परिशिष्ट 4

### अतिरिक्त जानकारी के लिए संदर्भ-सूची

स्टॉक एक्सचेंजों की वेबसाइट्स

[www.nseindia.com](http://www.nseindia.com)  
[www.bseindia.com](http://www.bseindia.com)

ऑनलाइन ट्रेडिंग की वेबसाइट्स

[www.icicidirect.com](http://www.icicidirect.com)  
[www.sharekhan.com](http://www.sharekhan.com)  
[www.equitymaster.com](http://www.equitymaster.com)

शेयर बाजार की जानकारी हेतु वेबसाइट्स

[www.moneycontrol.com](http://www.moneycontrol.com)  
[www.icicidirect.com](http://www.icicidirect.com)

निवेश संबंधी टी.वी. चैनल

सी.एन.बी.सी.  
जी. बिजनेस

समाचारपत्र

एकोनॉमिक टाइम्स

पत्रिकाएँ

दलाल स्ट्रीट  
बिजनेस टुडे  
बिजनेस इंडिया



## एमेज़ॉन पर समीक्षा लिखना न भूलें

यदि आपको यह पुस्तक पसंद आई हो, तो एमेज़ॉन पर समीक्षा लिखें और स्टार रेटिंग दें। देखिए, समीक्षा लिखने में सिर्फ 5 मिनट का समय लगता है, लेकिन इससे यह पुस्तक किसी दूसरे के काम आ सकती है। किसी शंका, प्रश्न, आलोचना या फीडबैक के लिए [sdixit123@gmail.com](mailto:sdixit123@gmail.com) पर मेल अवश्य करें। यदि इस पुस्तक ने आपकी किसी प्रकार से मदद की है, तो मैं निश्चित रूप से सुनना चाहूँगा। शुभकामनाएँ!